न भयं यमदूतानां, न भयं रोगाविकम्,
न भयं प्रेत राजस्य, गोविन्दे नमो नमः

भावार्थः जिन गोविन्द नाम के स्मरण करने मात्र से यमदूतों, किसी प्रकार के रोग आदि तथा किसी प्रेतसत्ता का भय नहीं होता है उनको नमस्कार है।

वर्ष : 15 अंक : 08

मातृवन्दना

भाद्रपद-आश्विन, कलियुगाब्द 5117, सितम्बर, 2015

सम्पादक
डॉ. दयानन्द शर्मा

✡

सम्पादक मण्डल
दलेल सिंह ठाकुर
जय सिंह ठाकुर

✡

प्रबन्धक
महीधर प्रसाद

✡

वार्षिक शुल्क
100 रुपये

कार्यालय
मातृवन्दना
डॉ. हेडगेवार भवन,
नाभा हाउस
शिमला-171 004
दूरभाष : 0177-2836990
e-mail:
www.matrivandana.org
matrivandanashimla@gmail.com

प्रकाशक एवं मुद्रक कमल सिंह सेन द्वारा मातृवन्दना संस्थान के लिए सवितार प्रैस, PI-820, फेस-2, उद्योग क्षेत्र, चण्डीगढ़ से मुद्रित तथा डॉ. हेडगेवार भवन, नाभा हाउस, शिमला-171004 से प्रकाशित।
सम्पादकः डॉ. दयानंद शर्मा।
वैधानिक सूचना : पत्रिका में छपी सामग्री से सम्पादक का सहमत होना जरूरी नहीं। इस सम्बन्ध में किसी भी कार्यवाही का निपटारा शिमला न्यायालय में ही होगा।

स्वप्नदर्शी का स्वप्न हो जाना।

'भारत-2020' का स्वप्न इतना अधिक संक्रामक था कि समाज के प्रत्येक तबके का मन इससे झंकृत हुआ। नेता से लेकर प्रशासक, युवा से लेकर धर्मगुरू, सभी की आंखों में इस स्वप्न ने चमक पैदा की। देश की ऊर्जा को एक दिशा में नियोजित करने में जितनी सफलता कलाम के इस स्वप्न को मिली, उसकी तुलना स्वतंत्र भारत के किसी अन्य विचार से नहीं की जा सकती। वह युवाओं को अपने नए स्वप्न गढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। संभवतः इसी कारण उनका लेखन और कथन, भाषा शैली और देह भाषा प्रायः युवा केंद्रित रहती थी।'❖

सम्पादकीय	अद्भुत प्रेरणा के स्त्रोत डॉ. कलाम	3
प्रेरक प्रसंग	मातृभाषा प्रेम	4
चिंतन	ऊंच-नीच की परख	5
आवरण	स्वप्नदर्शी का स्वप्न हो जाना	6
संगठनम्	अखण्ड भारत संकल्प दिवस	10
देवभूमि	राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने संस्कृत में ली शपथ	12
देश-प्रदेश	मुस्लिम ने उर्दू में लिखी हनुमान चालीसा	14
कुटुम्ब प्रबोधन	टूटते परिवार, छूटते संस्कार	16
काव्य जगत	भारत माँ की वेदना	18
स्वास्थ्य	अमृतधारा के विविध प्रयोग	19
शिक्षक दिवस	सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हो शिक्षा	20
महिला जगत	बेटी है अनमोल	21
दृष्टि	200 वर्षों से मांस मदिरा से दूर एक गांव	22
संस्कृतम्	संस्कृतं वदाम्	23
विविध	जरूरी है कि हम अपराधियों को	24
विश्व-दर्शन	अमेरिका की भव्य इमारत पर	26
घूमती कलम	आतंक के खिलाफ जीजा-साले की दिलेरी को सलाम.	28
समसामयिकी	सर्वाधिक उन्नत देश करते हैं मातृभाषा में व्यवहार	29
बाल-जगत	नाबालिग स्वयंसेवक ने तोड़ा मुस्लिम मोर्चा	31

पाठकों के पत्र

'मातृवन्दना' का जुलाई 2015 अंक को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इधर हैदराबाद के प्रचार विभाग के प्रकोष्ठ में इस पत्रिका को देख कर आकर्षित हुए बिना रहा नहीं गया। देखने के बाद कुछ निराशा भी हुई कि मुख-पृष्ठ पर 'सात्विक आहार जीवन की संजीवनी' छपा, परन्तु इससे संबंधित संपादकीय के अतिरिक्त कुछ खास लेख नहीं रहे। आवरण लेख पर केवल जंक फूड, फास्ट फूड का भाण्डा फोड़ा गया, मैगी के कारनामों का बखान किया गया। एक मात्र लेख 'शाकाहार से स्वास्थ्य की सुरक्षा' कुछ हद तक सटीक लगी किन्तु वह भी अधूरी जानकारी सी लगी। आवरण पृष्ठ देख कर आशा जगी थी कि यह 'सात्विक आहार' पर आधारित विशेष सामग्री प्रकाश में ले कर आई है। अन्य समाचार सामग्री प्रेरणा स्त्रोत रही। बदली सूरत घाटों की पढ़ कर अच्छा लगा। साक्षात्कार में क्रीड़ा-भारती से जुड़ी कई जानकारियां प्राप्त हुई। हमारे भारत के उदीयमान उभरे हुए खिलाड़ियों को भी इस संगठन में जोड़ दिया जाए तो उनके और खेल में सुधार आ जाएगा। जो पैसे पदक पद व नाम के लिए ही खेल रहे हैं आगे चलकर देश के लिए खेलने लगेंगे तो निश्चय ही उपरोक्त चारों अंश अपने-आप जुड़ जाएंगे। महिला-जगत पर आधारित लेख 'नई पीढ़ी की निर्मात्री है मातृशक्ति' प्रासंगिक और प्रभावी रहा तथा मां के प्रति अपनी आस्था जगाने में कारगर लगता है। ✠

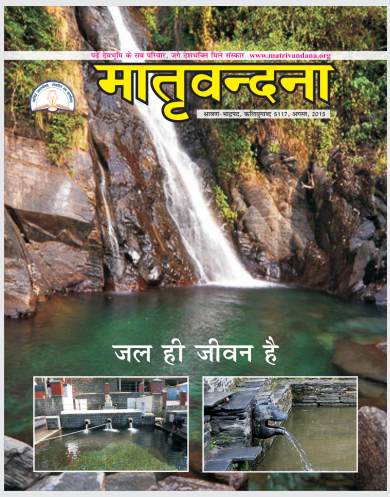

जमालपुरकर गंगाधर, हिन्दी प्राध्यापक,
अभ्युदय प्राच्य सांध्य महाविद्यालय,
जियागुडा, हैदराबाद

जज्बे की देश को आवश्यकता

जम्मू-कश्मीर के दो युवकों विक्रमजीत व राकेश ने पाकिस्तानी आतंकवादी नावेद को पकड़कर जो बहादुरी दिखाई वह काबिले तारीफ है। अक्सर घाटी के युवाओं को सुरक्षाबलों द्वारा पत्थरबाजी के लिए उकसाया जाता है। यह उन देशद्रोही लोगो के लिए एक सबक है। समाज और देश को इसी जज्बे की आवश्यकता है। आज दो युवा सामने आए हैं। कल यह संख्या हजारों में होगी।, ऐसी उम्मीद की जा सकती है। इन देशभक्त युवाओं को शाबाशी दी जानी चाहिए। समाज यदि जागता है तो क्या कुछ नहीं कर सकता यह हम इस घटना से देख चुके हैं। युवा किसी भी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर हैं। इनके नाम पर ही एक समर्थ शक्ति खड़ी की जा सकती है। जो आज के समय की आवश्यकता है। इन दोनों युवाओं की बहादुरी देश के नौजवानो के लिए प्रेरणा बनेगी। ❖

जोगेन्द्र सिंह, भल्याणी, कुल्लू

स्मरणीय दिवस (सितम्बर)

शिक्षक दिवस	**5 सितम्बर**
जन्माष्टमी	***5 सितंबर***
शिक्षक दिवस	***5 सितंबर***
श्री गुग्गा नवमी	***6 सितंबर***
एकादशी	***8, 24 सितंबर***
हिन्दी दिवस	***14 सितंबर***
महर्षि पराशर उत्सव मंड़ी	**18 सितंबर**
श्राद्ध आरम्भ	**28 सितंबर**

अद्भुत प्रेरणा के स्त्रोत डॉ. कलाम

भारत भूमि पर जिन महापुरुषों ने जन्म लिया, उन्होंने न केवल अपने देश में ही कीर्ति अर्जित की अपितु सम्पूर्ण विश्व को भी एक नया संदेश और नई दिशा प्रदान की। अपनी नई सोच, नये अनुसन्धान और विलक्षण प्रतिभा से विश्व का कल्याण किया। इस धरा पर यह परम्परा आदिकाल से चली आ रही है। वैदिक काल में ही ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना कर न केवल आध्यात्म की ऊँचाईयों को स्पर्श किया अपितु आर्यावर्त (भारत भूमि) के कल्याण एवं विकास हेतु विविध क्षेत्रों में नए-नए अनुसन्धान भी किए। प्राचीन काल से ही कृषि, स्वास्थ्य, खगोलशास्त्र, अंकगणित, ज्यामिति, रसायन आदि क्षेत्रों में भारत सबसे अग्रणी था। कहने का अभिप्राय यह है कि ऋषि-मुनि केवल आध्यात्मिक पुरूष नहीं थे अपितु वे वैज्ञानिक भी थे। उदाहरणत: भरद्वाज ऋषि 'विमान विद्या' पराशर मुनि की 'कृषि एवं रसायन विद्या' बौधायन की 'ज्यामिति' कणाद मुनि का 'अणु-परमाणु सिद्धांत' इत्यादि। ऐसे अनेक वैज्ञानिक हुए जिन्हें उस काल में ऋषि-मुनि की संज्ञा दी गई। यह उल्लेख करना जरूरी है कि इन सभी की अपनी पृथक्-पृथक् वैदिक शाखाएं एवं विचारधाराएं थीं और समाज में इनके अनुयायी भी विभाजित थे किन्तु सम्पूर्ण समाज ने उनको ऋषि-मुनि की संज्ञा दी। उत्तर काल में भी यही परम्परा रही और आज भी इसी परम्परा का निर्वहन हो रहा है। यह बात भी प्रमाणित हो चुकी है कि जो महान् वैज्ञानिक या आविष्कारक है उसका आध्यात्मिक स्तर भी बहुत ऊंचा होता है। आज जबकि महान् वैज्ञानिक एवं इस देश की जनता द्वारा सर्वोच्च पद पर बिठाए गए भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम हमारे मध्य नहीं रहे तो बरबस ही हमें यह आभास होता है कि वह भी सनातन परम्परा का निर्वहन करने वाले एक महापुरुष थे। यह इसलिए भी कि उनकी दृढ़ मान्यता थी कि आध्यात्मिक हुए बिना विज्ञान की शक्तियों का उपयोग जन कल्याण के लिए नहीं हो सकता। विज्ञान और आध्यात्म के बीच संतुलन स्थापित करने की बात ने उनके व्यक्तित्व को विशिष्ट बनाया। भारत को परमाणु शक्ति प्रदान करने वाले उपग्रहों के प्रक्षेपण में अहम भूमिका निभाने वाले और अग्नि-पृथ्वी जैसी मिसाईलों (प्रक्षेपास्त्रों) के निर्माणकर्ता डॉ. कलाम सचमुच में विलक्षण-प्रतिभा के धनी थे। अपने जीवन काल में ही अपनी कर्मनिष्ठा से वह मानो कि किवदंती बन गए थे। वह व्यक्ति जो अपने काम में इतना खो जाए कि जिसे व्यस्तता में खाने-पहनने का भी ध्यान न रहे, अपने ही घर में हो रहे विवाह-उत्सव को ही विस्मृत कर जाए, वही वैज्ञानिक नए आविष्कार कर देश की धड़कन बन सकता है। उनके व्यक्तित्व का दूसरा उज्जवल पक्ष उनकी नेक नीयत, सात्विकता, ईमानदारी, सृजन शीलता और अपने देश के प्रति दृढ़ निष्ठा एवं विश्वास था। युवाओं के लिए वह प्रेरणा के स्त्रोत और आदर्श पथ प्रदर्शक थे। उन्होंने आजीवन स्वयं को एक शिक्षक ही माना। राष्ट्रपति पद के कार्यभार से मुक्त होकर भी वह आराम से नहीं बैठे, युवाओं का मार्गदर्शन करते रहे। उनका मानना था कि हम बड़े स्वप्न देखें, ऊंचा लक्ष्य रखें। सन् 2020 तक भारत को विकसित देश बनाने का महत्वकांक्षी स्वप्न उनका था जिसने देश में एक नई ऊर्जा, प्रेरणा और नव चेतना का संचार किया। स्वप्नदर्शी आज देश ने खो दिया है किन्तु उनकी आत्मा का स्फुरण देश की नई पीढ़ी में संचारित रहेगा, इसी मनो कामना के साथ उन्हें शत्-शत् नमन।

मातृ भाषा प्रेम

डॉ. राममनोहर लोहिया बर्लिन विश्व विद्यालय (जर्मनी) में उच्च शिक्षा के लिए गए। वहां के नियमानुसार छात्र को अपना शिक्षक तथा परीक्षक स्वयं ही चुनना पड़ता था। उन्होंने अपना शिक्षक चुना प्रो. बर्नर जम्वार्ट को। अर्थशास्त्री के रूप में उन्हें विश्व-ख्याति प्राप्त थी, अत: लोहिया जी उनसे पढ़ने के इच्छुक थे। नियमानुसार लोहिया जी प्रोफेसर साहब के पास साक्षात्कार के लिए गए। प्रोफेसर ने प्रश्न पूछे और लोहिया जी ने उनके उत्तर अंग्रेजी में दिए। सुनकर जम्वार्ट मुस्कुराए यद्यपि वे अंग्रेजी जानते थे फिर भी उन्होंने कहा, 'मेरे बच्चे, मैं अंग्रेजी नहीं जानता।' बर्लिन विश्वविद्यालय अन्तर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि का था, फिर भी वहां जर्मन भाषा के माध्यम से ही पढ़ाई होती थी। लोहिया जी प्रोफेसर साहब का मन्तव्य समझ गए और बोले, 'ठीक है श्रीमान! मैं तीन माह बाद फिर आपसे मिलने आऊँगा।' अभिवादन कर उन्होंने विदा ली। दिन-रात परिश्रम कर उन्होंने जर्मन भाषा सीख ली। फिर प्रोफेसर जम्वार्ट के पास पहुंचे। अब उन्होंने उनसे जर्मन भाषा में बात की। अनेक विषयों पर चर्चा हुई। लोहिया जी ने भारत से इंग्लैंड तथा इंग्लैंड से जर्मनी आने का कारण बताया। वे अपने देश के लिए कुछ कर गुजरने की इच्छा रखते थे। प्रोफेसर ने जब यह सुना तो वे बहुत प्रसन्न हुए और उनके अपूर्व राष्ट्र-प्रेम तथा आत्माभिमान की भावना की मुक्त-कण्ठ से सराहना की।❖

धर्मात्मा कौन यह उत्तर खोज, युवराज बना राजा

एक राजा के तीन पुत्र थे। राजा तीनों युवराज में से किसी एक को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे। एक दिन राजा ने तीनों पुत्रों को बुलाया और कहा किसी धर्मात्मा को खोजकर लाओ? तीनों राजकुमार धर्मात्मा को खोजने निकल पड़े। कुछ समय बाद बड़ा राजकुमार एक मोटे आदमी को लाया। उसने राजा से कहा, 'ये सेठजी बहुत ही दान-पुण्य करते हैं। इन्होंने कई मंदिर, तालाबों का निर्माण कराया है।' यह सुनकर राजा ने सेठ का स्वागत किया और धन देकर उन्हें सम्मान पूर्वक विदा किया। दूसरा राजकुमार एक गरीब ब्राहमण को लेकर लौटा। उसने राजा से कहा, 'इन पंडितजी को चारों वेद और पुराणों का पूरा ज्ञान है। इन्होंने चारों धामों की यात्रा पैदल ही की है। ये तप भी करते हैं और सात-सात दिनों तक निर्जल भी रहते हैं इसलिए ये धर्मात्मा हैं।' राजा ने ठीक उस सेठ की तरह ही ब्राहमण को भी धन का दान देकर सम्मान पूर्वक विदा किया। आखिर में छोटा राजकुमार आया, वह अपने साथ एक आदमी को लाया। राजकुमार ने कहा, 'पिताश्री ! यह आदमी सड़क पर घायल पड़े एक श्वान के जख्मों को धो रहा था। जब मैंने इससे पूछा ऐसा करने पर तुम्हें क्या मिलेगा। तो इसने उत्तर दिया, मुझे तो कुछ नहीं मिलेगा हां ये जरूर है कि इस श्वान को आराम मिल जाएगा।' राजा ने उस व्यक्ति से पूछा, 'क्या तुम धर्म-कर्म करते हो? आदमी ने कहा, मैं अनपढ़ हूं। धर्म-कर्म के बारे में कुछ भी नहीं जानता। कोई मांगे तो अन्न दे देता हूं। कोई बीमार हो तो सेवा कर देता हूंयह सुनकर राजा ने कहा, 'कुछ पाने की आस रखे बिना दूसरों की सेवा करना ही धर्म है।' छोटे राजकुमार ने बिल्कुल सही व्यक्ति की तलाश की है। अत्यधिक कठिन से लगने वाले प्रश्न का एक अति सामान्य व प्रभावी सा उत्तर खोजने के कारण राजा ने अपने तीसरे बेटे को अपने उत्तराधिकारी के पद पर चुन लिया। इस तरह वह युवराज कुछ समय बाद राजा बन गया।❖

स्थानीय विकास और जन सहयोग

सेवा के नाम पर मानव जहां एक ओर समाज का विकास करता है, तो दूसरी ओर जाने-अनजाने में उससे तरह-तरह के प्राकृतिक एवं सामाजिक अपराध व शोषण भी हो जाते हैं। देखने, पढ़ने और सुनने में समस्या गंभीर है पर जटिल नहीं। समाज का विकास होना आवश्यक है। ध्यान रहे वह विकास पोषण पर आधारित हो, शोषण पर नहीं। हमारी प्रकृति शोषण पर आधारित किसी भी मूल्य पर होने वाले विकास को कभी सहन नहीं करती है। ऐसा विकास प्राकृतिक आपदा बनकर अपना रौद्र रूप अवश्य दिखाता है। स्थापना, उत्पत्ति, स्थिति, वृद्धि, न्यूनता और विनाश प्राकृतिक नियम है। इन्हें सदा स्मरण रखना चाहिए। वन, फूल-फल, वनस्पतियां, लताएं, कंद-मूल, फूल-पत्तियां और जड़ी-बूटियों से प्राकृतिक सौंदर्य में निखार आता है। इन्हें सुरक्षित रखने और इनका सदुपयोग करने से ही समस्त जीवों के प्राणों की रक्षा होती है। इन्हें नष्ट करना अथवा इनका शोषण करना इनके प्रति अन्याय है। वन-सम्पदा, वन्य जीव-जन्तु एवं कीट-पतंगे, प्राकृतिक जल भंडार, कृषि योग्य भूमि, गौ-धन, चारागाह तथा जीवन उपयोगी पशु-पक्षियों से मानव की विभिन्न आवश्यकताएं पूर्ण होती है। इन्हें नष्ट करना दानवता है, अपराध है। मनुष्य को जलवायु अनुकूल उपयोगी वस्त्र, श्रृंगार एवं सजावट संबंधी सामग्री प्रकृति से प्राप्त होती है। उसके पोषण का ध्यान रखते हुए उसका दोहन किया जाना सर्व हितकारी है जबकि उसका शोषण विनाश को आमंत्रित करता है। खुले आकाश में स्वच्छंद उड़ते हुए पक्षी दिन भर खेतों में दाना चुगते हैं, वे जंगल में फल भी खाते हैं। उन्हें निज नीढ़ की दिशा और दशा हर पल स्मरण रहती है। वह शाम को अपने नीढ़ में सकुशल वापिस आ जाते हैं और सुबह होने पर फिर दाना चुगने उड़ जाते हैं। उनके इस व्यवहार से प्रकृति का अविरल संतुलन बना रहता है। स्थानीय लोग विकास चाहते हैं। विकास करने के साथ-साथ उनके द्वारा लम्बे समय तक प्राकृतिक संतुलन बनाए रखना भी अति आवश्यक है। उसके लिए अपेक्षित प्राकृतिक पोषण के आधार पर अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रांतीय और क्षेत्रीय स्तर की सरकारी व गैर सरकारी सामाजिक तथा धार्मिक संस्थाओं और उनकी सहयोगी स्थानीय शाखाओं के सहयोग, श्रद्धालुओं की श्रद्धा और भक्तों की सेवा-भक्ति भावना द्वारा स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। आइए! हम सब मिलकर इस पुनीत कार्य में तन, मन, धन से सहयोग दे कर इसे सफल बनाएं।❖

-चेतन कौशल 'नूरपुरी'

ऊंच-नीच की परख

विभिन्न जातियां अपनी-अपनी जगह ठीक हैं। विभिन्न जातियों से हमारा भारत मजबूत हुआ है। सभी जातियों ने भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों से स्वतन्त्र करवाया है। किसी जाति को ऊंच-नीच की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। सभी जातियों के अपने-अपने नियम, अपने-अपने रीति रिवाज हैं। सभी जातियों की अपनी गरिमा है, परन्तु यदि हम जाति के आधार पर ऊंच-नीच की परख करने चले तो हम अज्ञान में ज्यादा डूबते जाएंगे। ऊंच-नीच की परख तो हमें व्यक्तियों के व्यवहार से करनी चाहिए, कि उक्त व्यक्ति का व्यवहार कैसा है, उसका आचरण कैसा है, बोल-चाल कैसी है, ईमानदार है या नहीं, कहीं बेईमान तो नहीं, कहीं अपराधी तो नहीं, बुरे काम तो नहीं करता, चोरी, डकैती तो नहीं करता, दूसरों को आदर देता है या नहीं, दूसरों का अपमान करता है या नहीं, उसमें मानवता है या नहीं, वह अपनी या दूसरों की इज्जत का ख्याल रखता है या नहीं। वह पड़ोसियों से कैसा व्यवहार करता है। वह दूसरों की बहू-बेटियों, बेटों, बुजुर्गों को किस नजर से देखता है, उसका उनके प्रति दृष्टिकोण क्या है। उसका चरित्र उच्च है या नहीं। कहीं चरित्रहीन तो नहीं। उससे समाज का भला हो रहा है या नहीं। उसकी नीयत साफ है या नहीं। अर्थात् कहने का अभिप्राय: यह है कि हम किसी व्यक्ति की ऊंच-नीच की परख उसकी जाति के आधार पर नहीं बल्कि उसके कर्मों के आधार पर कर सकते हैं।❖

जगदीश कुमार 'जमथली'

स्वप्नदर्शी का स्वप्न हो जाना

– जय प्रकाश सिंह

छोटे स्वप्नों को अपराध मानने वाले डा. एपीजे अब्दुल कलाम हमारे बीच नहीं रहे। सूचनाओं से अधिक स्वप्नों पर विश्वास करने वाले कलाम मानते थे कि दुनिया में बदलाव करने को सर्वाधिक संभावना स्वप्नशील और सृजनशील दिमाग में होती है। उन्होंने अपनी मान्यताओं के अनुरूप ही देश के सामने एक महत्वाकांक्षी स्वप्न रखा। स्वप्न था भारत को सन् 2020 तक विकसित देश बनाने का। इस स्वप्न ने भारतीय मन को छुआ और करोड़ों भारतीयों के दिल की धड़कन बना। इसकी लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि भारत में '2020' शब्द का उपयोग बदलाव के मुहावरे के रूप में दिया जाने लगा। 'भारत-2020' का स्वप्न इतना अधिक संक्रामक था कि समाज के प्रत्येक तबके का मन इससे झंकृत हुआ। नेता से लेकर प्रशासक, युवा से लेकर धर्मगुरू, सभी की आंखों में इस स्वप्न ने चमक पैदा की। देश की ऊर्जा को एक दिशा में नियोजित करने में जितनी सफलता कलाम के इस स्वप्न को मिली, उसकी तुलना स्वतंत्र भारत के किसी अन्य विचार से नहीं की जा सकती। वह युवाओं को अपने नए स्वप्न गढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। संभवत: इसी कारण उनका लेखन और कथन, भाषा शैली और देह भाषा प्राय: युवा केंद्रित रहती थी। 'सभी पक्षी बरसात से बचने के लिए किसी आश्रय को ढूंढते हैं, लेकिन बाज बादलों से ऊपर की उड़ान भरकर बरसात से बचाव करता है' और 'यदि तुम सूरज की तरह चमकना चाहते हो तो तुम्हें सूरज की तरह जलना भी पड़ेगा' जैसे उनके कथन युवाओं को सम्मोहित जैसे कर देते थे। कलाम की मन: स्थिति हर परिस्थिति में सकारात्मक, सृजनशील और प्रेरक रहती थी। जब वह राष्ट्रपति बने तो उन्होंने अपने पद का उपयोग जिस नवाचारी ढंग से युवाओं को प्रेरित करने के लिए किया, उसकी पहले कल्पना करनी भी मुश्किल थी। उन्होंने राष्ट्रपति पद का उपयोग देश में स्वप्नशील और देशभक्त युवाओं की पीढ़ी तैयार करने के लिए किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपनी श्रद्धांजलि में कलाम के इस पक्ष को रेखांकित किया– 'जब वह राष्ट्रपति थे और उसके बाद भी, उनका हमेशा यही कहना था कि वह

मुख्यत: अध्यापक हैं। अध्यापन उनका जज्बा था। जीवन के अंतिम क्षण भी वह विद्यार्थियों के साथ थे और अपना कार्य कर रहे थे।' वह पूरे देश के प्रेरणा के स्त्रोत थे, विशेषत: युवाओं के लिए। वह अंतिम दिन तक युवाओं से जुड़े रहे। कलाम अपने संबोधनों में प्राय: कहा करते थे कि आज भारत वैज्ञानिक क्षेत्र में जो भी उपलब्धियां हासिल करता है, उससे यह विकसित देशों की कतार में शामिल हो जाता है। यह बहुत जोर-शोर से बताया जाता है कि भारत ऐसी उपलब्धि हासिल करने वाला दुनिया का पांचवा, छठवां अथवा दसवां देश हो गया है। लेकिन भारतीयों के लिए असली खुशी तो तब आएगी जब भारत विज्ञान जगत में ऐसी चीजों का आविष्कार करना शुरू करेगा जो 'पहली' हों। यानी अंतरिक्ष से लेकर रक्षा क्षेत्र में भारतीय वैज्ञानिकों को ऐसे नवाचारी विचारों पर काम करना चाहिए, जो किसी अन्य देश के पास न हों। भारत को किसी श्रेणी में शामिल होने पर खुश होने के बजाय अपनी अलग श्रेणी बनाने पर काम करना चाहिए। संभवत: वह अपने इस कथन के जरिए भारत में हर स्तर पर व्याप्त अनुकरण की प्रवृत्ति को निशाना बना रहे होते थे। राजनेता भी उनके सकारात्मक और सृजनशील व्यक्तित्व से अछूते नहीं रह पाते थे। अपने कुशल राजनीतिक प्रबंधन के लिए पहचाने जाने वाले स्व॰ प्रमोद महाजन ने एक साक्षात्कार में स्वीकार किया था कि कलाम की बच्चे जैसी मासूमियत और सकारात्मक व्यक्तित्व उनको सबसे अधिक प्रभावित करता है। उनके नजदीक जाने पर लगता है कि जैसे आप किसी सकारात्मक विचारों के चुंबकीय क्षेत्र में घुस आए हों, जो आपको कुछ नया सोचने, कुछ नया करने के लिए प्रेरित कर रहा है। उनका सब कुछ नवाचार, स्वप्न और सृजन के लिए समर्पित था।

उनकी किताबें चाहे वह 'इंडिया-2020' हो अथवा 'विंग्ज ऑफ फायर' पढ़ते समय ऐसा लगता है मानों आप सकारात्मक विचारों की दुनिया में तैर रहे हों। लेकिन उनके स्वप्न कर्महीन नहीं हैं, केवल बौद्धिक जुगाली मात्र नहीं हैं। इसका आभास उनकी अन्य किताबों 'इनडॉमिटेबल स्पिरिट' और 'माई जर्नी : टांसफार्मिंग ड्रीम्ज इनटू एक्शन' को पढ़ते समय मिलता है। उनकी वेबसाइट का लक्ष्य भी 'प्रेरणा और राष्ट्रनिर्माण' है। वह स्वप्नों को सोचने तक सीमित नहीं होते थे, वह करने की प्रेरणा भी देते थे। उनके कर्म के प्रति समर्पण ने उन्हें जीते जी एक किवदंती बना दिया था। काम के प्रति उनके लगाव के अनेक किस्से प्रचलित हैं। वह साधारण से कपड़े और चप्पल पहनकर घंटे अपनी लैब में घुसे रहते थे। वह एक बार काम करने में इस कद्र तल्लीन हो गए थे कि अपने घर में होने वाली एक शादी के बारे में भूल गए, जैसे अनेक किस्से कलाम के बारे में सुने-सुनाए जाते हैं। स्वप्न और कर्म के संयोग ने भारत के एकीकृत मिसाइल कार्यक्रम को मूर्त रूप दिया। अग्नि, पृथ्वी, आकाश, नाग और त्रिशूल जैसी मिसाइलों के विकास में कलाम की केंद्रीय भूमिका थी और इसके कारण भारत को एक मजबूत सुरक्षा कवच मिला। पोखरण में दूसरी बार बुद्ध मुस्कराए, तो उसका श्रेय भी अब्दुल कलाम को ही जाता है। इन परमाणु-विस्फोटों के बाद पूरी दुनिया में भारत को देखने का नजरिया बदल गया। भारत को शक्ति से लैस करने वाला यह वैज्ञानिक प्रकृति से बहुत ही आध्यात्मिक था। विज्ञान और आध्यात्म के बीच संतुलन स्थापित करने की बात भी उनके व्यक्तित्व को अलग बनाती थी। उनकी यह दृढ़ मान्यता थी कि आध्यात्मिक हुए बगैर विज्ञान की शक्तियों का उपयोग जनकल्याण के लिए नहीं हो सकता। स्वामी नारायण संप्रदाय से उनका विशेष लगाव था। देश के लगभग सभी धार्मिक गुरूओं से उनके विशेष संबंध थे। प्राय: ऐसे चित्र मीडिया में आते रहते थे, जिनमें कलाम किसी धर्मगुरू की बातों को इस तरह से सुनते हुए दिखाई पड़ जाते थे, जैसे कोई मासूम बच्चा किसी अध्यापक की बात सुन रहा हो, उसे समझने की कोशिश कर रहा हो। हाल में उनकी एक किताब 'ट्रासेंडेंस: माई स्पीरिचुअल एक्सपीरिएंसेज विद प्रमुख स्वामी जी' का विमोचन हुआ था। इस किताब में उन्होंने स्वामी नारायण संप्रदाय के पांचवें स्वामी जी के साथ की आध्यात्मिक यात्रा का विवरण दिया है। इस किताब का केंद्रीय तत्व आध्यात्म और विज्ञान का समन्वय ही है। माउंट आबू स्थित ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय में दिए गए भाषण में उन्होंने कहा था कि धार्मिक और वैज्ञानिक ताकतें मिलकर एक महानतर आध्यात्मिक शक्ति पैदा कर सकती हैं। केवल भारत ही धार्मिकता को आध्यात्मिकता में बदलने की क्षमता रखता है। जाहिर है वह धर्म से अधिक आध्यात्मिकता पर विश्वास करते थे। कलाम का विज्ञान सामाजिक विसंगतियों के भी समाधान खोजने का प्रयास करता था। वह समान अवसरों की उपलब्धता पर खासा जोर देते थे। इसी लिहाज से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच सुविधाओं और अवसरों की खाई को पाटने के लिए उन्होंने पूरा (प्रोवाइडिंग अरबन अमेनिटीज टू रूरल एरियाज) की संकल्पना प्रस्तुत की थी। उनके सहयोगी सृजनपाल सिंह के अनुसार शिलांग में उनके अंतिम शब्द थे कि 'इस धरती को जीने लायक कैसे बनाया जाए।' उनके ये शब्द उनकी आध्यात्मिक प्रवृति और जनकल्याण की अटूट प्रतिबद्धता की तरफ संकेत करते हैं। कलाम प्राय: इस बात को युवाओं के सामने दोहराते कि 'किसी को पराजित करना बहुत आसान है, लेकिन किसी को जीतना बहुत मुश्किल।' कलाम ने अपने जीवन में 'आसान' और 'मुश्किल' दोनों काम किए। भारत को हथियारों का सुरक्षा कवच पहनाकर उन्होंने अन्य देशों को पराजित करने का आसान काम किया और करोड़ों भारतीयों को प्रेरित कर, सार्थक महास्वप्नों को परोसकर दिल जीतने का कठिन काम भी। ❖

'भारत-2020' का स्वप्न इतना अधिक संक्रामक था कि समाज के प्रत्येक तबके का मन इससे झंकृत हुआ। नेता से लेकर प्रशासक, युवा से लेकर धर्मगुरू, सभी की आंखों में इस स्वप्न ने चमक पैदा की। देश की ऊर्जा को एक दिशा में नियोजित करने में जितनी सफलता कलाम के इस स्वप्न को मिली, उसकी तुलना स्वतंत्र भारत के किसी अन्य विचार से नहीं की जा सकती। वह युवाओं को अपने नए स्वप्न गढ़ने के लिए प्रेरित करते थे। संभवत: इसी कारण उनका लेखन और कथन, भाषा शैली और देह भाषा प्राय: युवा केंद्रित रहती थी।'

सपनों की आखिरी नींद में सो गए डा. एपीजे अब्दुल कलाम

27 जुलाई 2015 को जनता के दिलो-दिमाग पर राज करने वाले पूर्व राष्ट्रपति डा. एपीजे अब्दुल कलाम का आइआइएम शिलांग में दिल का दौरा पड़ने से स्वर्गवास हो गया। इस प्रकार हमने एक नेक, दरियादिल व सच्चा भारतीय खो दिया। कलाम साहब के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी खासियत उनके उच्च सात्विक विचार और उससे भी बढ़कर उन्हें साकार करने की ईमानदार व अथक मेहनत। वे मृत्यु से पूर्व शिलांग में थे और छात्रों को संबोधित कर रहे थे। डा. कलाम का जीवन और उलब्धियां दोनों ही हम सबके लिए सदैव प्रेरणा का स्त्रोत बने रहेंगे। डा. कलाम सफलता का अनुपम फार्मूला बताते थे। वह कहते थे कि, 'सफलता का रहस्य है सही समय पर सही निर्णय लेना। सही निर्णय लेने के लिए अनुभव आवश्यक है और पूर्व में लिए गए गलत निर्णयों से हमें अनुभव मिलता है।' गागर में सागर जैसे इस संदेश में यह सत्य छिपा है कि असफलता से हताश होने के बजाय असफलता को ही सीढ़ी बनाकर सफल हुआ जा सकता है। वह युवाओं को यह जीवन दर्शन देते थे, 'कि नई सोच का दुस्साहस दिखाओ और असंभव को खोजने का साहस करो।' डा. कलाम युवाओं को यह मंत्र देते थे कि, 'वे ऑटो सजेशन तकनीक का प्रयोग करें और खुद से कहें कि 'मैं सबसे अच्छा हूं', 'मैं यह कर सकता हूं', 'मैं चैंपियन था और हूं', तथा 'आज का दिन मेरा है'। खुद को दिए गए इन चार सुझावों को जब हमारा अवचेतन मस्तिष्क ग्रहण कर लेता है तो व्यक्ति में एक नया आत्मविश्वास व नई स्फूर्ति आ जाती है और सफलता की सीढ़ियां चढ़ना आसान हो जाता है। वह कहा करते थे कि,

'सपना वो नहीं है जो आप नींद में देखें,
सपने वो हैं जो आपको नींद ही नहीं आने दें।
इंतजार करने वालों को सिर्फ उतना ही मिलता
है, जितना कोशिश करने वाले छोड़ देते हैं।
जीवन में कठिनाइयां हमें बर्बाद करने नहीं
आती हैं, बल्कि यह हमारे छुपे हुए सामर्थ्य और
शक्तियों को बाहर निकालने में हमारी मदद
करती हैं, कठिनाइयों को यह जान लेने दो कि
आप उससे भी ज्यादा कठिन हो।
देश का सबसे अच्छा दिमाग, क्लास रूम की
आखिरी बेंचों पर मिल सकता है।'

डा. कलाम सफलता का अनुपम फार्मूला बताते थे। वह कहते थे कि, 'सफलता का रहस्य है सही समय पर सही निर्णय लेना। सही निर्णय लेने के लिए अनुभव आवश्यक है और पूर्व में लिए गए गलत निर्णयों से हमें अनुभव मिलता है।' गागर में सागर जैसे इस संदेश में यह सत्य छिपा है कि असफलता से हताश होने के बजाय असफलता को ही सीढ़ी बनाकर सफल हुआ जा सकता है। वह युवाओं को यह जीवन दर्शन देते थे, 'कि नई सोच का दुस्साहस दिखाओ और असंभव को खोजने का साहस करो।' डा. कलाम युवाओं को यह मंत्र देते थे कि, 'वे ऑटो सजेशन तकनीक का प्रयोग करें और खुद से कहें कि 'मैं सबसे अच्छा हूं', 'मैं यह कर सकता हूं', 'मैं चैंपियन था और हूं', तथा 'आज का दिन मेरा है'। खुद को दिए गए इन चार सुझावों को जब हमारा अवचेतन मस्तिष्क ग्रहण कर लेता है तो व्यक्ति में एक नया आत्मविश्वास व नई स्फूर्ति आ जाती है और सफलता की सीढ़ियां चढ़ना आसान हो जाता है।

भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में उनका कहना था कि, 'सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए एक व्यापक आंदोलन जरूरी है। यह घर और विद्यालय से ही प्रारम्भ करना होगा। माता-पिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, यदि ये तीनों बच्चों को सच्चाई और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई इनको डिगा पाए। अत: हर घर में इस तरह के आंदोलन की आवश्यकता है जो सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को खत्म कर सके।

व्यक्तित्व के विविध रंग

सुरक्षा की चिंता नहीं

एक बार 400 बच्चों को संबोधित कर रहे थे। बिजली चली गई। वे उनके बीच में ही पहुंच गए तथा बच्चों से घेरकर बैठने को कहा। फिर उन्हें संबोधित किया।

अपनी कमाई भी दान दी

सरकार राष्ट्रपति और पूर्व राष्ट्रपतियों के खर्चे उठाती है। वह पता चलते ही उन्होंने अपनी पूरी संपत्ति और जिंदगी भर की बचत अपने बनाए हुए एक ट्रस्ट को दान कर दी। डॉ. वर्गीस कुरियन से कहा- 'अब मैं राष्ट्रपति बन गया हूं। मैं अपनी बचत और वेतन का क्या करूं? राष्ट्रपति बनने पर एक झोली साथ लाये थे और उम्मीदें देकर दायित्व मुक्त होने पर चले गये।

भारत को दी 'परमाणु' ताकत

पोखरण में दूसरी बार न्यूक्लियर विस्फोट कर परमाणु हथियार बनाने की क्षमता जाहिर की। भारत उन चुनिंदा देशों में शामिल हो गया जिनके पास परमाणु ताकत है। डॉ0 कलाम ने भारत के विकासस्तर को सन् 2020 तक विज्ञान के क्षेत्र में अत्याधुनिक करने के लिए एक विशिष्ट सोच प्रदान की।

उपग्रहों के प्रक्षेपण में अहम भूमिका

सन् 1962 में वे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन में आए, जहां उन्होंने सफलतापूर्वक कई उपग्रह प्रक्षेपण परियोजनाओं में अपनी भूमिका निभाई। परियोजना निदेशक के रूप में भारत के पहले स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यान एसएलवी-3 के निर्माण में अहम भूमिका निभाई।

इसलिए कहा गया मिसाइलमैन

डॉ0 कलाम ने अग्नि और पृथ्वी जैसी मिसाइलें बनाईं। ये पूरी तरह स्वदेशी तकनीक से बनी थीं। इसीलिए उन्हें मिसाइलमैन भी कहा जाता था। वे जुलाई 1992 से दिसम्बर 1999 तक रक्षा मंत्री के विज्ञान सलाहकार रहे।❖

साभार : दैनिक भास्कर

भ्रष्टाचार के सम्बन्ध में उनका कहना था कि, 'सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार उन्मूलन के लिए एक व्यापक आंदोलन जरूरी है। यह घर और विद्यालय से ही प्रारम्भ करना होगा। माता-पिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक, यदि ये तीनों बच्चों को सच्चाई और ईमानदारी का पाठ पढ़ाते हैं तो इसके बाद जीवन में शायद ही कोई इनको डिगा पाए। अत: हर घर में इस तरह के आंदोलन की आवश्यकता है जो सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार को खत्म कर सके।

अखण्ड भारत संकल्प दिवस

हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला के अन्तर्राष्ट्रीय दूरवर्ती शिक्षा एवं अध्ययन केन्द्र में 'अभ्युदय अध्ययन मण्डल' द्वारा अखण्ड भारत संकल्प दिवस के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान ओमप्रकाश शर्मा, नारकोटिक्स ब्यूरो, चण्डीगढ़ रहे। विशिष्ट अतिथि डॉ0 वीर सिंह रांगड़ा, प्राध्यापक भौतिकी विभाग तथा मुख्य वक्ता श्री सन्जीवन कुमार, प्रांत प्रचारक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, हि0प्र0 विशेष रूप से उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का सुभारम्भ दीप प्रज्वल्लन के माध्यम से हुआ। उसके पश्चात् 'अभ्युदय अध्ययन मण्डल' शिमला के संयोजक श्री राजेन्द्र शर्मा, शोध छात्र ने आए हुए अतिथियों तथा उपस्थित प्राचार्यों, गणमान्यों एवं छात्र वीथिका का स्वागत किया एवं 'अभ्युदय' के विश्वविद्यालय में वर्षभर के कार्यकलापों के विषय में जानकारी दी। कार्यक्रम के अध्यक्ष ने वर्तमान समय में देश के समक्ष बढ़ते हुए नशे की चुनौती के सम्बन्ध में सबका ध्यान आकर्षित किया तथा किस प्रकार युवा वर्ग को इस दल-दल में फंसने से रोका जा सकता है, उसका एक खाका प्रस्तुत किया। साथ ही साथ सामाजिक संस्थाओं तथा जागरूक नागरिकों से नशा उन्मूलन के सम्बन्ध में संकल्प लेने का आग्रह भी किया। स्वतन्त्रता की अखण्डता के विषय में उन्होंने पंजाबी में एक भावात्मक कविता सुनाई जो सचमुच उपस्थित श्रोतावृन्द के मानस को झकझोरने वाली

थी। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री सन्जीवन कुमार ने तो अपने ओजस्वी उद्बोधन में मानो स्वतन्त्रता आंदोलन के घटनाक्रम का एक सजीव चित्र ही प्रस्तुत कर विभाजन की विभीषिका और त्रासदी की एक ऐसी तस्वीर सबके सामने प्रस्तुत कर दी, जिससे उपस्थित गणमान्य और श्रोतावृन्द भावविभोर होकर उद्वेलित हुए बिना नहीं रह सके। एक क्षण के लिए तो सम्पूर्ण वातावरण पूर्णत: गमगीन सा लगा मानो अपनी मातृभूमि की खण्डित स्वतन्त्रता प्राप्ति की एक-एक घटना को प्रत्यक्ष अपने सम्मुख घटित होते हुए हम देख रहे हों। लक्ष-लक्ष देशवासियों तथा शहीदों की कुर्बानी के फलस्वरूप मिली यह आजादी हमें खण्डित मातृभूमि के रूप में प्राप्त हुई। संगठित प्रयासों के बल पर जिस प्रकार सन् 1947 में बनी बर्लिन की दीवार को गिराकर सन् 1990 में पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी एक हो सकते हैं तो दृढ़ संकल्प से हम भी अपनी खोई हुई मातृभूमि को पुन: प्राप्त कर सकते हैं। अन्त में उन्होंने ऐसा ही संकल्प इस कार्यक्रम के माध्यम से लेने का उपस्थित गणमान्य जनों से आह्वान किया।❖

संपादक के नाम पत्र लेखन अभ्यास वर्ग

शिमला जिला के प्रचार विभाग के सौजन्य से सरस्वती विद्या मन्दिर विकास नगर में संपादक के नाम पत्र लेखन का अभ्यास वर्ग आयोजित किया गया, जिसमें शिमला जिला के 'मातृवन्दना' से जुड़े पाठकों व स्थानीय नागरिकों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में नालागढ़ बद्दी के वरिष्ठ पत्रकार श्री रणेश राणा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उनके मार्गदर्शन में इस वर्ग में आए प्रतिभागियों ने संपादक के नाम पत्र लिखकर अपनी प्रतिभा का प्रस्फुटन दर्ज किया। श्री राणा ने इस अवसर पर संपादक के नाम पत्र की उपयोगिता के बारे कई जानकारियां साझा कीं व भविष्य में समाज में घटित किसी भी घटना की वस्तुस्थिति किसी भी समाचार पत्र को पत्र के माध्यम से अवगत, प्रशंसा या शिकायत के द्वारा प्रेषित कर सकते हैं। किसी भी मीडिया संस्थान में चाहे वह प्रिंट हो अथवा इलैक्ट्रॉनिक, पाठकों के संपादक के नाम पत्र, दर्शकों व श्रोताओं के सुझावों का अत्यधिक महत्व होता है। ❖

कुल्लू में दुर्गावाहिनी शौर्य प्रशिक्षण वर्ग 2015 सम्पन्न

दुर्गावाहिनी का प्रदेश स्तरीय शौर्य प्रशिक्षण शिविर (वर्ग) का आयोजन 24 जुलाई से 1 अगस्त, 2015 तक रामेश्वरी टीचर्ज ट्रेनिंग कॉजेल शाढ़ाबाई (भून्तर) में किया गया। इस प्रशिक्षण वर्ग में अपने प्रदेश के 24 संगठनात्मक जिलों से 17 जिलों का प्रतिनिधित्व रहा। जिसमें 32 स्थानों से 68 प्रशिक्षणार्थियों ने इस वर्ग में भाग लिया, मारण्डा (पालमपुर) छात्रावास की 11 बच्चियों ने भी वर्ग में भाग लिया। आठ शिक्षिकाएं तथा चार बहनें प्रबंधक के नाते वर्ग में उपस्थित रही। वर्ग में बहनों को केन्द्रीय तथा प्रांतीय कार्यकर्ताओं का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। वर्ग का उद्घाटन केंद्रीय मार्गदर्शक मंडल के पूज्य संत महामण्डलेश्वर रामशरण दास जी महाराज तथा विश्व हिन्दू परिषद् के प्रांत मंत्री श्री देव कुमार ने किया। इस अवसर पर दुर्गावाहिनी की उत्तर भारत संयोजिका सुश्री रजनी ठुकराल, प्रांत विहिप सह-मंत्री सुश्री मांचली ठाकुर, प्रदेश संयोजिका दुर्गावाहिनी सुश्री भावना ठाकुर, प्रदेश सह संयोजिका सुजाता शर्मा भी उपस्थित रहे। वर्ग के समापन अवसर पर दुर्गावाहिनी की उत्तर भारत संयोजिका सुश्री रजनी ठुकराल ने कहा कि वर्तमान समय में देश में पारिवारिक मूल्यों का पतन हो रहा है। लोग अपने धर्म, संस्कृति, परम्पराओं को छोड़ रहे हैं। महिलाओं पर अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ रहे हैं, महिलाएं अपने को कहीं भी सुरक्षित महसूस नहीं कर रही हैं। अपने प्रदेश में भी धर्मान्तरण, लव जेहाद की घटनाएं दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। इन सब कुरीतियों से लड़ने तथा धर्मान्तरण व लव जेहाद जैसी घटनाओं से निपटने के लिए दुर्गावाहिनी समय-समय पर महिलाओं (युवतियों) की आत्मरक्षा हेतु व देश के प्रति उनकी जागरूकता बनाए रखने के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन करती है।❖

भारत विकास परिषद के जोन एक की समन्वय समिति की कार्यशाला सम्पन्न

भारत विकास परिषद के जोन एक की समन्वय समिति की दो दिवसीय कार्यशाला परवाणू के होटल पार्क में सम्पन्न हुई, जिसमें राष्ट्रीय पदाधिकारियों के अतिरिक्त जोन एक में शामिल राज्य के प्रभारी भी शामिल थे। इस महत्वपूर्ण बैठक में हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, पंजाब और चंड़ीगढ़ से प्रांत अध्यक्ष, महासचिव व कोषाध्यक्ष भी शामिल थे। इस कार्यशाला में जनसेवा से जुड़े कार्यों की रूपरेखा पर विचार विमर्श किया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप से राष्ट्रीय सचिव डॉ0 अनिल कालिया, राष्ट्रीय महामंत्री अजय दत्ता, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यशपाल गुप्ता जोनल चेयरमैन श्री राकेश सहगल तथा जोनल महासचिव डॉ0 राजेश पुरी उपस्थित रहे। सर्वप्रथम हिमाचल पूर्व प्रान्त अध्यक्ष सलिल शमशेरी ने आये हुए अतिथियों का स्वागत किया। कार्यशाला का संचालन हिमाचल प्रदेश के महासचिव श्रीकांत अकेला तथा जोन एक के महासचिव श्री राजेश पुरी ने संयुक्त रूप से किया।❖

राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने संस्कृत में ली शपथ

आचार्य देवव्रत ने राजभवन में आयोजित सादे लेकिन गरिमापूर्ण समारोह में हिमाचल प्रदेश के 27 वें राज्यपाल पद की शपथ ली। प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस मंसूर अहमद मीर ने उन्हें पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। आचार्य देवव्रत संस्कृत भाषा में शपथ लेने वाले प्रदेश के दूसरे राज्यपाल बने। इससे पहले स्व. विष्णुकांत शास्त्री ने संस्कृत में शपथ ली थी। राज्यपाल को इस दौरान गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। आचार्य देवव्रत का जन्म 18 जनवरी 1959 को हरियाणा में हुआ। उन्होंने हिंदी व इतिहास विषयों में पंजाब विश्वविद्यालय चंडीगढ़ व कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय से क्रमश: 1984 व 1996 में स्नातकोतर की डिग्री प्राप्त की। उन्होंने वर्ष 2002 में अखिल भारतीय नेचरोपेथी परिषद नई दिल्ली से नेचरोपैथी एवं यौगिक विज्ञान में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। वह शिक्षाविद् रहे हैं। उन्होंने 34 वर्षों तक संप्रति गुरूकुल कुरूक्षेत्र में प्राचार्य के रूप में सेवाएं दी हैं। वह पर्यावरण संरक्षण, योग प्रोत्साहन, युवाओं में नैतिक मूल्यों के प्रादुर्भाव, गोवंश नस्ल के संरक्षण, जैविक कृषि, कन्या शिक्षा के प्रोत्साहन, आयुर्वेद एवं नेचरोपेथी आदि जैसे क्षेत्रों में समाजसेवक के रूप में सक्रिय रहे हैं। उन्होंने समाज को विशेषकर बच्चों एवं युवाओं को समृद्ध संस्कृति के संबंध में जागरूक करने और देशभक्ति जैसे उच्च मूल्यों के प्रसार के लिए उल्लेखनीय कार्य किया है। उनकी उत्कृष्ट सेवाओं के लिए उन्हें वर्ष 2002 में अमेरिकन मेडल ऑफ ऑनर, वर्ष 2003 में भारत ज्योति सम्मान, वर्ष 2006 में हिमोत्कर्ष राष्ट्रीय एकात्मकता पुरस्कार, वर्ष 2009 में जनहित शिक्षक श्री सम्मान और वर्ष 2011 में अक्षय ऊर्जा सम्मान आदि जैसे विभिन्न सम्मान मिले हैं। उन्होंने स्वास्थ्य का अनमोल मार्ग-प्राकृतिक चिकित्सा (हिंदी व अंग्रेजी संस्करण), गुरूकुल कुरूक्षेत्र का गौरवशाली इतिहास जैसी पुस्तकें लिखने के अतिरिक्त अनेक पत्रिकाओं का संपादन और अनुवाद कार्य भी किया है। उन्होंने गुरूकुल के सुदृढ़ीकरण के लिए बहुमूल्य सेवाएं प्रदान की हैं।❖

दो लाख में बनाई फार्मूला – वन कार

आईआईटी कमांद मंडी के भावी इंजीनियरों ने महज दो लाख रुपये में फार्मूला वन कार बनाकर अपने विश्वास को और अधिक बुलंदियों तक पहुंचाया है। मैकेनिकल इंजीनियरिंग तृतीय वर्ष के प्रशिक्षु छात्र यशु मदान की टीम ने अब तक की सबसे सस्ती रेस कार तैयार की है। इस कार का कई बार परीक्षण किया जा चुका है। इस कार का आईआईटी चेन्नई में होने वाली वार्षिक प्रदर्शनी में परीक्षण किया जाएगा। इस कार में बुलेट मोटर साईकल का 500 सीसी का इंजन लगाया गया है। रफ्तार के लिए चार मारूती कार के टायर जो इस कार को 110 किमी की प्रति घंटा से दौडा सकते हैं। डिस्क ब्रेक के साथ पैट्रोल इंजन से चलने वाली इस कार का नाम ईगल (बाज) 2.0 स्पोर्ट्स कार रखा गया है। कार बनाने में मात्र दो लाख रूपये का खर्च आया है। इसे कैंपस के छात्रों ने तैयार किया है।❖

साभार दैनिक जागरण

शेष पृष्ठ 19 पर.....

भारतीय खेलों में सबसे ज्यादा साहस वाला खेल – कब्बड्डी

भारत में सदियों से खेला जा रहा खेल कबड्डी अब दुनिया में लोकप्रियता को हासिल कर रहा है। अब पूरा विश्व इस खेल और इसके खिलाड़ियों को पहचानने लगा है। भारत के गांव व गली मोहल्ले की सांस्कृतिक विरासत इस खेल को खेलने का आनन्द इसे खेलने वाले खिलाडी अच्छी तरह जानते है। हमारी सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि के इस खेल के लिए यह एक अच्छी शुरूआत है, क्योंकि आज भी कई मौको पर भारत के गांव व मेलों मे कबड्डी मैच को देखने के लिए दूर दूर से लोग आते हैं व इसका आनंन्द लेते हैं। इस खेल की खास बात यह है कि यह खेल खिलाड़ियों में एकता को बनाए रखता है। इसे खेलने के लिए 12.5 मीटर मैदान की आवश्यकता होती है जो प्रत्येक गांव में सहजता से उपलब्ध होता है। इस खेल से खिलाड़ियों मे साहस का निर्माण होता है। जो जीवन के प्रत्येक क्षण में उनके काम आता है। यह खेल खिलाडियों में चुस्ती, स्फुर्ती व नए रक्त संचार का वाहक है। इसमें प्रत्येक खिलाड़ी को एकदम चौकस रहना पड़ता है तथा विरोधी पक्ष के खिलाड़ियों को आउट करने के लिए उन्हें विशेष रणनीति के साथ चतुराई से काम लेना पड़ता है। आजकल एक टीवी चैनल द्वारा करवाई जा रही प्रो–कब्बड़ी सीजन दो प्रतियोगिता में हिमाचल के दबोटा निवासी अजय ठाकुर बेंगलूरू बुल्स व कांगड़ा के रोहित राणा पिंक पैंथर जयपुर से खेल रहे हैं। अजय ठाकुर की टीम बैंगलुरू बुल्स इस वर्ष प्रो कबड्डी सीजन में दूसरा स्थान प्राप्त किया। यू मुंबा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन दोनों युवाओं को सीजन एक से देश में पहचान मिली थी व आज इनके साथ–साथ बाकी खिलाडियों को जिन्हें दो साल पहले तक कोई पहचानता भी नहीं था आज देश व विदेशों में एक नई पहचान मिली है। विद्यालयों व गांवों में खेले जा रहे इस खेल के लिए अब ये खिलाड़ी रोल मॉड़ल का काम कर रहे हैं। सरकार व देश के जनमानस को भी इस तरह के साँस्कृतिक खेलों को बचाए रखने के लिए एकजुट होकर कार्य करने की आवश्यकता है।❖

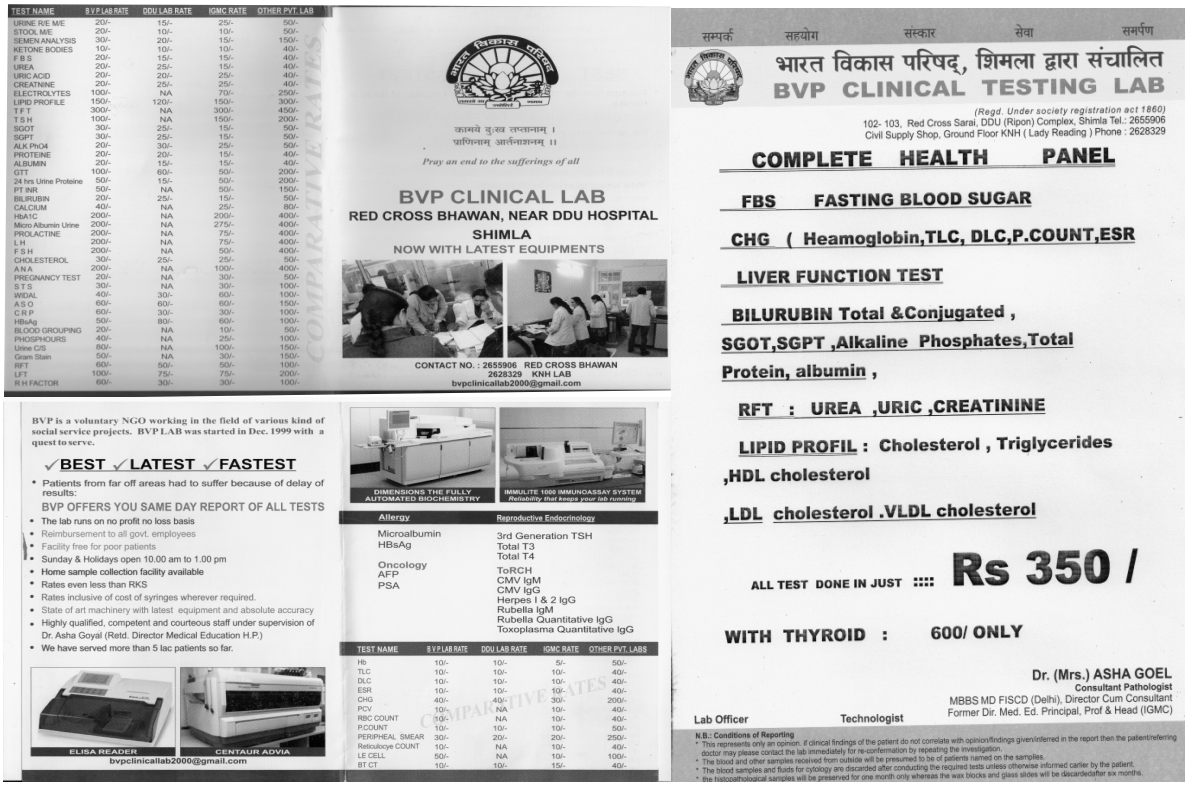

37 मुस्लिम परिवारों ने अपनाया हिंदू धर्म

यूपी में 37 मुस्लिम परिवारों के करीब सौ लोगों ने विधिवत् हवन-पूजन के साथ हिंदू धर्म अपना लिया। इनकी कलाई पर कलावा बांधने के बाद माथे पर तिलक लगाया गया। इनमें से अधिकांश मूलरूप से कोलकाता के हैं जो पिछले कई साल से देवरी रोड स्थित देव नगर के पीछे बस्ती में रह रहे हैं। इनमें से कुछ के पिता या दादा ने धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम धर्म अपना लिया था। धर्म जागरण समिति और बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को देवरी रोड स्थित देव नगर के पीछे एक बस्ती में इस कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें बस्ती के 37 मुस्लिम परिवार हिंदू धर्म से जुड़े। झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले लोग तैयार होकर बुद्धि-शुद्धि यज्ञ के लिए पहुंचे। यहां पंडित मुरली मनोहर ने सबसे पहले मंत्रोच्चारण के साथ गंगाजल छिड़ककर सभी का शुद्धिकरण कराया।❖

भारतीय ने खोजी पानी साफ करने की तकनीक

भारतीय मूल के अमेरिकी शोधकर्ता ने ऐसी कृत्रिम झिल्ली विकसित की है जो पानी को साफ करने की मौजूद विधियों में बड़ा सुधार करेगी। खुद ही तैयार हो जाने वाली यह कृत्रिम झिल्ली गैसों को अलग करने, दवा वितरण और डीएनए पहचान में भी सहयोग करेगी। यह झिल्ली वसा और प्रोटीन अणुओं से निर्मित है। पेंसिलवेनिया स्टेट यूनिवर्सिटी में रसायन इंजीनियरिंग के सहायक प्रोफेसर मनीष कुमार के अनुसार, प्रकृति बेहद सलीके से अपना काम करती है। जैविक झिल्लियों में प्रोटीन प्रवाहित करने वाली विधि अपने आप में असाधारण है। इस विधि को कृत्रिम तरीके से बनाना बेहद कठिन कार्य है। इस तकनीक का सबसे कुशल इस्तेमाल पानी की सफाई में किया जा सकता है। शोधकर्ताओं के अनुसार विकसित की गई नई झिल्ली पानी साफ करने के लिए बनाए गए पहले के वॉटर चैनल प्रोटीन से कहीं बेहतर है।

गोहत्या के खिलाफ निकले मार्च में मुस्लिम महिलाएं भी हुई शामिल

गोहत्या के विरोध में यूपी के अलीगढ़ में मुस्लिमों ने मंगलवार को पैदल मार्च निकाला। इसमें नेता और मुस्लिम महिलाएं भी शामिल हुईं। उनके हाथों में बैनर और पोस्टर थे। उन पर लिखा था- 'हर मुस्लिम की यही पुकार, गोमाता पर न हो अत्याचार।❖

मुस्लिम ने उर्दू में लिखी हनुमान चालीसा

अनवर जलालपुरी ने महाभारत उर्दू अनुवाद के बाद अब अनुवादित हनुमान चालीसा को भी उर्दू में पढ़ा जा सकेगा। यूपी के जौनपुर निवासी मुस्लिम युवक आबिद अल्वी ने हनुमान चालीसा का उर्दू अनुवाद किया है। आबिद ने चालीसा का अनुवाद 'मुसद्दस' शैली में किया है। उर्दू के जानकार जानते होंगे कि मुसद्दस में छह लाइन होती हैं, जबकि चौपाई के संदर्भ में चार लाइनें होती हैं। आबिद ने बताया कि हनुमान चालीसा के बाद अब वह शिव चालीसा को उर्दू में अनुदित करने की तैयारी में है। आबिद ने बताया कि उसे हिंदी से उर्दू अनुवाद में तीन महीने का समय लगा। आबिद के इस उर्दू अनुवाद में कुल 15 बंद हैं और प्रत्येक में छह लाइने हैं। आबिद का कहना है कि वह हमेशा से चाहता था कि दोनों समुदाय के लोग एक दूसरे की परंपराओं और संस्कृति को समझें।❖

घर वापसी

रामालयम्, अम्बेडकर नगर, सूर्यपेट जिला नलगोण्डा (तेलंगाना) में नौ जून को आयोजित समारोह में 5 गांवों के 52 परिवारों के 220 सदस्य अपने पूर्वजों के सनातन धर्म में वापिस आए। विहिप केंद्रीय सह मंत्री जी. सत्यम् व प्रांतीय पदाधिकारी बी.एस. मूर्ति व रणधीर रड्डी ने आगन्तुकों का स्वागत किया।❖

कौटिल्य को टक्कर देती गूगल गर्ल ईशू, सेकेंड में करती हर सवाल को हल

कुछ बच्चे बचपन से ही अपनी अद्भुत प्रतिभा के चलते लोगों का स्नेह पा लेते हैं उनमें से एक है गांव गुढ़ा में रहने वाली ईशु दहिया। ईशु दहिया वैसे तो छठीं कक्षा की छात्रा है लेकिन उसका ज्ञान ग्रेजुएट से भी ज्यादा है। जिस तरह से कम्प्यूटर पर क्लिक करते ही गूगल बड़े प्रश्न का उत्तर सामने ला देता है उसी तरह से ईशु दहिया मात्र पूछते ही प्रश्न का उत्तर सामने प्रस्तुत कर देती है। इसलिए इस छात्रा को उसके अध्यापक व ग्रामीण गूगल गर्ल का नाम दे चुके हैं। ईशु दहिया को 22 भाषाओं का ज्ञान है। इन 22 भाषाओं को यह छात्रा अच्छी तरह से बोल, पढ़ और लिख लेती है। इसके अलावा देश के 500 वीर शहीदों के नाम व उनके जीवन का ज्ञान रखती है। हमारे देश के हर राज्य के हर जिले का नाम जानती है। इसके अलावा ताईक्वांडो के खेल में अपने भार वर्ग प्रतियोगिता में यह छात्रा राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मैडल जीतकर खेलों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुकी है।❖

ट्रक से 12 बैल बरामद

अम्बाला पुलिस ने अम्बाला-हिसार रोड़ पर नग्गल के करीब नाकाबंदी कर एक ट्रक से 12 बैल बरामद किए। बैलों को अम्बाला की तरफ लाया जा रहा था। बाद में पुलिस न इन बैलों को मोखामाजरा की राधा-माधव गौशाला में सुरक्षित पहुंचा दिया। ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने इस संबंध में मामला दर्ज करके आरोपी चालक की तलाश शुरू कर दी है।❖

मुस्लिम युवक ने सोने की स्याही से लिखी गीता

गुजरात के सूरत शहर में रविवार को एक कार्यक्रम में संघ प्रमुख मोहन भागवत को मुस्लिम युवक द्वारा सोने की स्याही से लिखी गई भगवद् गीता भेंट की गई। शुभमंगल फाउंडेशन के अभयदेव सूरीश्वर जी महाराज ने इसे तैयार करवाया। सुरेंद्र नगर के यूनुसभाई शेख ने इसमें जैन धर्म के 45 आगम भी सुनहरी स्याही से लिखे हैं। सोने की स्याही से लिखने के लिए तैयार किए गए कागज में किसी तरह के केमिकल का उपयोग नहीं किया गया। यह कागज 500 साल तक खराब नहीं होगा। इसे रखने के लिए विशेष पेटी बनाई गई है। गीता में 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, लेकिन मूल गीता में 745 श्लोक हैं। शेष 45 श्लोक सामान्य तौर पर उपलब्ध नहीं होने से घनश्यामजी द्वारा बताए गए 45 श्लोकों को भी इसमें शामिल किया गया है।❖

गायब हो गए हैं सुभाषचंद्र बोस की मृत्यु से जुड़े दस्तावेज

पूर्व सूचना आयुक्त वजाहत हबीबुल्ला ने कहा है कि नेताजी सुभाष चंद्र बोस की रहस्यमय मृत्यु से संबंधित रिकॉर्डों को इसलिए जारी नहीं किया जा रहा क्योंकि हो सकता है ये गुम हो गए हों या चूहे कुतर गए हों। उधर, सुभाष चंद्र बोस के पोते चंद्र बोस ने कहा कि हम इस बारे में ईमानदार कोशिश चाहते हैं, जैसा पीएम ने हमें आश्वासन दिया था। हमारी मांगे जरूर मांगी जानी चाहिए।❖

टूटते परिवार, छूटते संस्कार

- दलेल सिंह ठाकुर

आज समाज पाश्चात्य संस्कृति की चपेट में अपनी मौलिकता खो रहा है। परम्पराओं के टूटने के साथ परिवार टूट रहे हैं। यही वजह है कि परिवार के सदस्यों के बीच दूरी बढ़ रही है। पति-पत्नी के बीच दूरियां बढ़ रही हैं। माना कि परिवर्तन ही जीवन है। समय हमेशा गतिशील है और परिवर्तन विकास का एक रूप है। विकास की इस गति के साथ-साथ बहुत कुछ छूट भी रहा है। लोग अपने स्वयं तक होकर रह गए हैं। सिर्फ अपने लिए सोचना और खान-पान, रहन सहन से लेकर बदलते विचारों और सामाजिक सरोकारों पर ही केंद्रित हैं। होटलों में खाने की आदत पड़ गई है। सप्ताह में एक-दो दिन होटल में खाना मानों कुछ लोगों के लिए जरूरी है। आधुनिक गृहणी को अब खाना पकाने और परिवार के लोगों को खिलाने में आनंद ही नहीं आता। खाना परोसने और उसे प्रेमपूर्वक खिलाने में जो आनंद आता था, उससे हम लोग दूर होते जा रहे हैं। नारी ही तो परिवार की धुरी है और परिवार से ही संस्कार मिलते हैं। एक संस्कारित परिवार का सदस्य ही तो समाज में संस्कारित वातावरण बनाता है। परिवार से ही संस्कार नष्ट हो गया तो समाज आगे कैसे बढ़ पाएगा।

मध्यम वर्ग तेजी से आगे बढ़ना चाहता है। वह खर्च करना चाहता है। इस वर्ग के पास सम्पन्नता आई है और वह और अधिक सम्पन्न होना चाहता है। चारों ओर जो विज्ञापनी मायाजाल है उसने उसे जकड़ रखा है। यह वर्ग किसी भी कीमत पर खुद को आधुनिक चकाचौंध में शामिल करना चाहता है चाहे उसे उधार ही उठाना पड़े। चाहे वह 'क्रेडिट कार्ड' हो या बैंक से आसान दरों पर मिलने वाला कर्ज, मनचाहा खरीदना ही है। भारतीय समाज जो पहले ऋणमुक्त और दुनिया में सबसे अधिक बचत करने वला समाज माना जाता था, आज ऋणयुक्त और कम बचत तथा ज्यादा खर्च करने वाला समाज बनने की ओर अग्रसर है। सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत कहां है। वह भारत कहां है जिसमें त्याग, संयम उदारता, बड़ों के प्रति आदर, भाई बहन का आत्मीय रिश्ता, त्यौहार, सामूहिक जीवन, पारस्परिक प्रेम, सहिष्णुता, धैर्य, क्षमा, अक्रोध, शान्ति, सद्गुणों की सहज सीख देने वाली अद्भुत संयुक्त परिवार की प्रथा थी, जो अब धीरे-धीरे छूटती जा रही है।

एक दूसरे पर भरोसा, आपसी विश्वास के मायने बदल चुके हैं। सारी परम्पराएं अतीत की बात हो गई हैं। संयुक्त परिवार ही टूट रहे हैं तो परम्पराओं या संस्कारों की बात कठिन लगती है। गृहस्वामी और गृहस्वामिनी दोनों काम पर जाते हैं। दोनों काम इसलिए करते हैं कि शायद परिवार चलाने के लिए बहुत पैसे चाहिए होते हैं। कुछ हद तक इसके पीछे व्यावहारिक कारण हो सकते हैं लेकिन अधिकांशत: यह देखा गया है कि लोगों में ऐश-ओ-आराम की चाहत दिन व दिन बढ़ती जा रही है। इसलिए अधिक से अधिक पैसा कमाने की चाहत पत्नी को भी काम पर जाने के लिए मजबूर कराती है। धीरे-धीरे पति-पत्नी के बीच फासले बढ़ते हैं और परिवार विखाण्डित होते हैं। पति-पत्नी के अलग-अलग जगह काम करने और संयुक्त परिवार में न रहने से बच्चों पर भी विपरीत असर पड़ा है। दादा-दादी, नाना-नानी के साथ न रहने और पारिवारिक संस्कारों को न अपनाने से बच्चे उच्छृंखल और असुरक्षित हो गए हैं। बच्चों को वे संस्कार नहीं मिल पाते जो दादा-दादी के सानिध्य में मिल सकते हैं। सीता-राम की कहानी सुनाने वाली दादी, गोवर्धन पर्वत कृष्ण भगवान ने क्यों उठाया यह कथा सुनाने वाली नानी, घरों में रामचरित मानस का सुन्दर काण्ड या अखण्ड पाठ का आयोजन, जन्मदिन पर कोई धार्मिक अनुष्ठान ये सारी बातें अचानक गायब होती जा रही हैं। हमारा घर पूरी तरह से अंग्रेजी, अंग्रेजियत और पश्चिमी तौर-तरीकों, अशिष्टाचार, यहां तक कि पाश्चात्य प्रतीकों और पद्धतियों से भरता जा रहा है। गणेश और देवी-देवताओं की धार्मिक प्रतीक वाली मूर्तियां ड्राइंग रूम से गायब हो गई हैं उनकी जगह तंत्र-मंत्र की टेढ़ी-मेढ़ी कृतियों

या ग्लैमर से भरी भद्दी कला कृतियों ने ले ली है। यहां यह कहना भी गलत नहीं होगा कि दादा-दादी, नाना-नानी, मौसा-मौसी, बुआ-मामी के रिश्ते ही घर से गायब होते दिख रहे हैं। ये सब जब वर्षों बाद किसी शादी या समारोह में इकट्ठे होते हैं तो बच्चे कहते हैं- आंटी, हाउ आर यू, 'हाय'। बच्चों को यह नहीं समझाया जाता कि बेटा मौसी को आंटी नहीं कहते बल्कि गर्व महसूस करते हैं कि हमारे बच्चे को इतनी अच्छी अंग्रेजी आती है। पहनावे में बदलाव साफ दिखता है। बदन दिखाऊ आधुनिक वस्त्रों का चलन बढ़ रहा है। आधुनिक माता-पिता इसकी रोकथाम करने के बजाय इसे प्रात्साहन देने में लगे हैं। इसे आधुनिक फैशन समझा जाता है। खुद को उच्च संस्कारित समझते हैं कम कपड़े पहनने वाले। आजकल घरों में खाते समय कुर्सी व टेबल का इस्तेमाल किया जाता है। पारिवारिक आयोजनों में परोसकर खाना खिलाने के साथ-साथ 'बफे सिस्टम' पनपना शुरू हो गया है। मध्यमवर्गीय परिवारों में भी 10-12 रिश्तेदार आ गए तो खाना होटल से आने लगा है और वह बफे पद्धति से खिलाया जाने लगा है। मध्यम वर्ग तेजी से आगे बढ़ना चाहता है। वह खर्च करना चाहता है। इस वर्ग के पास सम्पन्नता आई है और वह और अधिक सम्पन्न होना चाहता है। चारों ओर जो विज्ञापनी मायाजाल है उसने उसे जकड़ रखा है। यह वर्ग किसी भी कीमत पर खुद को आधुनिक चकाचौंध में शामिल करना चाहता है चाहे उसे उधार ही उठाना पड़े। चाहे वह 'क्रेडिट कार्ड' हो या बैंक से आसान दरों पर मिलने वाला कर्ज, मनचाहा खरीदना ही है। भारतीय समाज जो पहले ऋणमुक्त और दुनिया में सबसे अधिक बचत करने वला समाज माना जाता था, आज ऋणयुक्त और कम बचत तथा ज्यादा खर्च करने वाला समाज बनने की ओर अग्रसर है। सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत कहां है। वह भारत कहां है जिसमें त्याग, संयम उदारता, बड़ों के प्रति आदर, भाई बहन का आत्मीय रिश्ता, त्यौहार, सामूहिक जीवन, पारस्परिक प्रेम, सहिष्णुता, धैर्य, क्षमा, अक्रोध, शान्ति, सद्गुणों की सहज सीख देने वाली अद्भुत संयुक्त परिवार की प्रथा थी, जो अब धीरे-धीरे छूटती जा रही है। संयुक्त परिवार की प्रथा ने ही हिन्दू समाज को एक डोर में बांधे रखा है। यदि यह डोर टूट गई तो अंजाम भयानक हो सकता है। परिवार है तो संस्कार हैं, संस्कार है तो परिवार भी सुरक्षित हैं। मुझे लगता है सुख और दुख दोनों में संयुक्त परिवार में रहने का अपना महत्व है। प्रेम, त्याग, संस्कार जैसी बातें हम संयुक्त परिवार में रहकर ही सीख सकते हैं। जब हम समाज या देश के लिए प्रेम और त्याग जैसे मूल्यों की बात करते हैं तो ये सब बाते अपने परिवार से शुरू करनी होंगी। समाज को सुधारने की सीख देने से पहले व्यक्ति विशेष को सुधरना होगा। इसकी शिक्षा बुजुर्गों के मार्गदर्शन और अनुभवों से ही ले सकते हैं।❖

INDIAN ACUPRESSURE & HEALTH CARE CENTRE

(हिमाचल का एकमात्र संस्थान)

Dr. Nidhi Bala
M.D. ACU Rattna
M. 98175-95421

Dr. Shiv Kumar
M.D. ACU Rattna
M. 98177-80222

सर्वाइकल, ब्लड प्रेशर, जोड़ों के दर्द, डिस्क प्रोब्लम, माइग्रेन, गठिया, घुटनों का दर्द, यूरिक एसिड, अधरंग, त्वचा रोग आदि बीमारियों का एक्युप्रेशर और प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति से इलाज किया जाता है।

आगामी कैम्प

के लिए मोबाईल पर सम्पर्क करें

ट्रेनिंग, ट्रीटमेंट और कैम्प के लिये संपर्क करें:

Regular Clinic:
C/o K.K. Sharma Vivek Nagar
Pingah Road, Una (H.P.)

उत्तर

1. आचार्य देवव्रत, 2. मुख्य न्यायाधीश मंसूर अहमद मीर, 3. यू-मुंबा, 4. प्रथम, 5. सायना मिर्जा, 6. बन्धन बैंक, 7. सुन्दरराजन पिचाई, 8. 68, 9. आई. एम. गुट, 10. हेरजई़

भारत माँ की वेदना

हिन्दी, पुत्री देववाणी संस्कृत की,
चिन्ता नहीं हमें मां-बेटी की,
अंग्रेजीयत में अवहेलना दोनों की,
वेदना, परोक्ष में धकेलते स्व-संस्कृति।
भारत माँ तू सहमी, सहमी है क्यों?
माँ यह रूदन, क्रंदन, सिसकियां क्यों?
करोड़ो पुत्रों के होते हुए अवहेलना क्यों?
सिसकियाँ हैं रावण, कंस सम लादेन से।
आतंकवाद, फूट, स्वार्थ प्रवृति से
सिसकियां ड्रग्ज से हैं,
सिसकियां झूठे वादों से हैं
सिसकियां मिलावट, धोखाधड़ी से है,
घुटन पर्यावरण प्रदूषण से है,
सिसकियां निश्चेतन लोगों से है।
देखते, सुनते, चुप्पी साधे है क्यों?
माओवादी, नक्सलवादी उपजे कहाँ से,
भ्रूण, हत्या, रेप, हत्या प्रवृति पनपी कहां से,
राष्ट्रहित, भूल, स्वार्थ लिप्त हुए हमी से,
भारत मां की सिसकियां वेदना है हमीं से।
सिसकियां हैं परिणाम एडस का,
कैंसर विकृत मानसिकता का,
अन्धानुकरण देता है पीड़ा,
अनैतिकता, अन्धविश्वास खलता,
स्वदेशी तेज व वैश्वीकरण विचारधारा,
पूछते उदासीनता, रूदन है क्यों?
'मीडिया' कर रहा मेरा परिहास,
धर्मनिरपेक्षता कोरा ताण्डव प्रयास,
नशाखोरी, जुआ आदि से रून्धे श्वास,
भाषा, कलह, क्षेत्रवाद की हवा,
पूछते भारती तिरस्कार क्यों?
जागो, सम्भलो, बदलो युग को,
मानवता, करूणा, सहिष्णुता,
सहजता सुहाती सन्तति को,
श्रम, निष्ठा, श्रद्धा ज्ञान को,
स्वतंत्र राष्ट्र अपनाता गांधी को,
सिसकियां अश्रुपात न होता मां को।
मां तुम कल्याणी हो, सन्तोषी हो
मां तुम करूणामयी, निर अभिमानी हो,
मां तुम पालक, पोषक शक्ति पुंज हो,
हम स्वार्थी, शोषक, हिंसक न हो,
हम अज्ञानी, अन्धविश्वासी न हो,
मां वर दो, शक्ति दो, हम मानव हों।❖

सोहन लाल गुप्त
शील-सदन-नम्होल, बिलासपुर

अमृतधारा के विविध प्रयोग

* अमृतधारा कई बीमारियों में दी जाती है, जैसे बदहजमी, हैजा और सिर-दर्द।
* थोड़े से पानी में तीन-चार बूँद अमृतधारा की डालकर पिलाने से बदहजमी, पेट-दर्द, दस्त, उल्टी ठीक हो जाती है। चक्कर आने भी ठीक हो जाते हैं।
* एक चम्मच प्याज के रस में दो बूँद अमृतधारा डालकर पीने से हैजा में फायदा होता है।
* अमृतधारा की दो बूँद ललाट और कान के आस-पास मलने से सिर-दर्द में फायदा होता है।
* मीठे तेल में अमृतधारा मिलाकर छाती पर मालिश करने से छाती का दर्द ठीक हो जाता है।
* सूँघने पर साँस खुलकर आता है तथा जुकाम ठीक हो जाता है।
* थोड़े से पानी में एक-दो बूँद अमृतधारा डालकर छालों पर लगाने से फायदा होता है।
* दाँत-दर्द में अमृतधारा का फाया रखकर दबाये रखने से फायदा होता है।
* चार-पाँच बूँद अमृतधारा ठंडे पानी में डालकर सुबह-शाम कुछ दिन पीने से श्वास, खाँसी, दमा और क्षय-रोग में फायदा होता है।
* आँवले के मुरब्बे में तीन-चार बूँद अमृतधारा डाल कर खिलाने से पेट दर्द से राहत मिलती है।
* बताशे में दो बूँद अमृतधारा डालकर खाने से पेट के दर्द में आराम मिलता है।
* भोजन के बाद दोनों वक्त ठंडे पानी में दो-तीन बूँद अमृतधारा डालकर पीने से मंदाग्नि, अजीर्ण, बादी, बदहजमी एवं गैस ठीक हो जाती है।
* दस ग्राम गाय के मक्खन और पाँच ग्राम शहद में तीन बूँद अमृतधारा मिलाकर प्रतिदिन खाने से शरीर की कमजोरी कम होती है।
* अमृतधारा की एक-दो बूँद जीभ में रखकर, मुँह बंद करके सूँघने से चार मिनट में ही हिचकी में फायदा होता है।
* दस ग्राम नीम के तेल में पाँच बूँद अमृतधारा मिलाकर मालिश करने से, हर तरह की खुजली में फायदा होता है।
* ततैया, बिच्छू, भँवरा या मधुमक्खी के काटने की जगह पर अमृतधारा मसलने से दर्द में राहत मिलती है।
* दस ग्राम वैसलीन में चार बूँद अमृतधारा मिलाकर, शरीर के हर तरह के दर्द पर मालिश करने से दर्द दूर होती है। फटी बिवाई और फटे होठों पर लगाने से दर्द ठीक हो जाता है तथा फटी चमड़ी जुड़ जाती है।❖

बवासीर, भगन्दर, फिशरज़
एनलपोलिप्स, पाईलोनाइडल साइनस
आदि गुदा रोगों के क्षार-सूत्र (आयुर्वेद)
पद्धति से बिना चीर-फाड़ के ऑप्रेशन

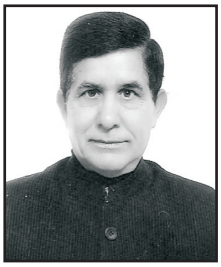

Dr. Hem Raj Sharma
B.Sc. HPU Shimla, GAMS, MD, University Rohtak, PGD Health & Family welfare, Punjab Uni. Chandigarh CC. Yog & Naturalpathy, Gujrat University, Jamnagar, CRAV Kshar-Sutra Specialisation, New Delhi

SPECIALIST IN ANO-RECTAL DISORDERS

Facilities : Emergency 24 Hours, Indoor Facility, Well Equipted Operation Theatre, Computerized Clinical Laboratory, ECG, Pregnancy & Gynaecological Check-up,Immunisation for children

जगत अस्पताल एवं क्षार-सूत्र सेंटर
गवर्नमैंट कॉलेज के नजदीक, नंगल रोड, ऊना-174303 (हि.प्र.)
Phone : 94184-88660, 94592-88323

सशक्त राष्ट्र निर्माण के लिए हो शिक्षा

– डॉ. ओम गुलेरिया

प्राणी जगत ने इस विश्व में जब कदम रखा तो उसके प्रत्येक घटक को जीवन जीने की प्रबल इच्छा जागृत हुई। विशेषकर मानव व्यवहार को आधार मानकर विचार करें तो मनुष्य जीवन जीने के साथ अपने वातावरण को समझने की कोशिश करता है, उसके आस-पास क्या, कौन, क्यों और किसलिए है? ये प्रश्न स्वभाविक रूप से उसके मन में उत्पन्न होते हैं। मानव विश्व को समझने के लिए अपने अनुभव का प्रयोग करता है साथ ही इस ज्ञान को एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को प्रदान करती है, इसलिए एक पीढ़ी के द्वारा अनुसंधान व प्रयोगात्मक विधि से निकाले जीवन उपयोगी निष्कर्ष दूसरी पीढ़ी के लिए सहज अनुकरणीय एवं उसके विकास में महत्वपूर्ण सिद्ध होते हैं। नई पीढ़ी के आने की बात करें तो सबसे अधिक विकास महत्वपूर्ण है। जब बच्चा मां के गर्भ में है तो उसे किस तरह का वातावरण दिया जाए, जब पैदा होता है तो कौन से वातावरण में रखा जाए, शिशु व तरूण को कौन से मूल्यों से अवगत करवाया जाए, क्योंकि तरूण पीढ़ी ही किसी भी संगठन या परिवार का आधार एवं उसके सपनों को साकार करने वाली होती है, क्योंकि इसमें ही असीमित सामर्थ्य तथा समर्पण की सिद्धता होती है। सीखने, आगे बढ़कर नेतृत्व करने की इच्छा व क्षमता के कारण ही भारत तथा विदेशों में विभिन्न क्रांतियों व सामाजिक परिवर्तनों का नेतृत्व, तरूण पीढ़ी ने ही किया है। आचार्य चाणक्य के तरूण विद्यार्थियों ने ही पूर्व काल में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। अब सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है कि एक शिशु का शैक्षिक व सह-शैक्षिक क्षेत्र का विकास कैसे किया जा रहा है?उसके विभिन्न आयामों, जैसे बौद्धिक, शारीरिक , संवेगात्मक, नैतिक, भावनात्मक विकास करके उसके व्यक्तित्व का विकास एवं जीवन कौशल का विकास कैसे किया जा सके। यह कार्य प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली में गुरूकुलों में बच्चे के अधिगम उपलब्धि स्तर को वांछित रूप से पूर्ण किया जाता रहा है। गुरूकुलों के माध्यम से दी गई शिक्षा से न केवल बच्चे के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास हुआ बल्कि गणित, ज्योतिष, साहित्य, खगोल-शास्त्र, अर्थशास्त्र व अन्य-विविध क्षेत्रों में भारत ने पूरे विश्व को ज्ञान से परिचित करवाया। अगर हम विचार करें तो सन् 1835 व उसके उपरांत लॉर्ड़ मैकाले के कुटिल प्रयासों से भारतवर्ष की शिक्षा नीति पर कुठारघात किया गया और हमारा विशेषकर प्राथमिक, प्रारम्भिक व उच्च शैक्षिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया। अस्त-व्यस्त शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है कि आज बच्चे बिना शिक्षा कौशल के विकास के बजाए शिक्षा हासिल कर रहे हैं। "Our children are moving on without moving up" आज पूरा दबाव बच्चे पर है "Be a good chap" अच्छा बच्चा बनो। अध्यापक हो, अभिभावक हो या समुदाय के अन्य बंधु सभी की अपेक्षा बच्चे से है। अगर सारी उम्मीदें बच्चे से ही पूरी करनी है तो शैक्षिक व सह-शैक्षिक ढांचा भी हमें तैयार करना होगा।❖

लॉर्ड़ मैकाले के कुटिल प्रयासों से भारतवर्ष की शिक्षा नीति पर कुठारघात किया गया और हमारा विशेषकर प्राथमिक, प्रारम्भिक व उच्च शैक्षिक ढांचा अस्त-व्यस्त हो गया। अस्त-व्यस्त शब्द का प्रयोग इसलिए किया गया है कि आज बच्चे बिना शिक्षा कौशल के विकास के बजाए शिक्षा हासिल कर रहे हैं। "Our children are moving on without moving up" आज पूरा दबाव बच्चे पर है "Be a good chap" अच्छा बच्चा बनो। अध्यापक हो, अभिभावक हो या समुदाय के अन्य बंधु सभी की अपेक्षा बच्चे से है। अगर सारी उम्मीदें बच्चे से ही पूरी करनी है तो शैक्षिक व सह-शैक्षिक ढांचा भी हमें तैयार करना होगा।

.....क्रमशः

राष्ट्रपति पदक विजेता शिक्षाविद्

बेटी है अनमोल

जय सिंह ठाकुर

भारत अब डिजिटल दुनिया में प्रवेश कर चुका है। अब अधिक अवसर यहां के युवाओं को प्राप्त हो रहे रहे हैं। हर युवा-युवती इस युग में पीछे रहने के लिए तैयार नहीं है। डिजिटल भारत में आज का युवा व जनमानस क्या सोच रहा है। हमें स्वत: ही इसका संज्ञान होना चाहिए। इन दिनों डिजिटल मीड़िया यानी फेसबुक-ट्वीटर, इंस्टाग्राम, वाट्सएप जैसे माध्यमों से बेटी बचाओ अभियान तेजी से चल रहा है। हर किसी को बेटी की शिक्षा, तरक्की, व सुरक्षा के बारे में एक नई पोस्ट देखने को मिल रही है। बेटी को बचाने के लिए चल रहा यह अभियान डिजिटल या वर्चुअल स्पेश से बाहर निकलकर देश में बसने वाली 128 करोड़ की आबादी तक पहुंचे इसके लिए प्रयास करने की आवश्यकता है। बहनों की सुरक्षा को लेकर देश की सरकार ने रक्षा बंधन के दिन जो सुरक्षा बीमा योजना शुरू वह बेटियों के भविष्य और उसके परिवार के लिए सरकार द्वारा किया जा रहा सराहनीय कदम है। बेटी होगी तो कल होगा। बेटि आज नहीं बल्कि इस धरती के आस्तित्व से लेकर मानव समाज को आगे बढ़ाने अपना पूर्ण सहयोग दे रही है। बेटियों से एक नहीं कई परिवार बसते हैं। पुरातन सोच से बाहर निकल कर आज भी बेटियों के जन्म को लेकर जो भ्रांतियां समाज में फैली है उसे आज डिजिटल माध्यमों से दूर किया जा रहा है लेकिन हमें आज भी यह बात ध्यान में रखने की आवश्यकता है कि इतने प्रचार माध्यमों के होने के बाद भी बेटियों के जन्म अनुपात में कमी आ रही है । वर्चुअल स्पेस की इस दुनिया मे हम कितनी ही तरक्की क्यों न कर लें लेकिन व्यवहारिकता का सारा कार्य यथार्थ के धरातल पर ही होगा। बेटी है तो कल है। लेकिन देश के बहुत से पिछड़े राज्यों में अभी भी बेटियों के जन्म अनुपात में भारी कमी है। विकृतियों से उत्पन्न अंधविश्वास की अवधारणा से बेटियों के जन्म की अवधारणा को बदलना होगा। आज बेटियों के बेहतर भविष्य के बीच में आ रही हर प्रकार की बाधाओं को भारत सरकार दूर करने में प्रयासरत है, लेकिन कोई भी कार्य समाज की भागीदारी के बिना सुनिश्चित नहीं हो सकता । भारत समाज को समान रूप से बेटियों को बचाने में अपनी भूमिका निभानी होगी, तभी भारत विकसित भारत के रूप में दुनियां में एक नई पहचान के रूप में उभरेगा।❖

महिला जगत- स्वामी विवेकानन्द का दृष्टिकोण और भारतीय स्त्री जीवन-भावी पथ

आत्म – नियन्त्रण सभी के लिए आवश्यक है, किन्तु स्त्रियों के लिए इसकी और अधिक आवश्यक है क्योंकि शक्ति जितनी होती है, उसे सही मार्ग पर रखना भी उतना ही अधिक महत्वपूर्ण और आवश्यकता होता है। उदाहरण के लिए, परमाणु शक्ति अधिक शक्तिशाली होती है और इसलिए इसकी सुरक्षा व उपयोग के लिए अनेक सुरक्षा उपाय करना आवश्यक होता है। शक्ति के भी अनेक प्रकार होते हैं। जैसे कठिन शक्ति और सौम्य शक्ति, सकल शक्ति और सूक्ष्म शक्ति। स्त्री सौम्य शक्ति और सूक्ष्म शक्ति का भण्डार है और इसकी अभिव्यक्ति आक्रमक शक्ति की अभिव्यक्ति से भिन्न होती है। यदि एक स्त्रि किसी पुरुष से स्पर्धा करती है और अपने मुद्दों को परिवार मे चिख-पुकार के द्वारा, जिद्द करके, अहंभाव के साथ प्रभुत्व बनाकर, अधिकार मानकर आक्रमक रुप से रखती है, तो वह अपनी विशेष शकितयों को खो देती है और परिवार एक लड़ाई का मैदान बन जाता है। उसकी शक्तियां सूक्ष्म और सौम्य शक्तिया हैं, जिससे वह घटनाओं को उसकी इच्छानुसार मोड़ सकती हैं। उसे यह कार्य सही समय की प्रतिक्षा करते हुए धैर्यपूर्वक, सूक्ष्म रुप से, कुशलता-पूर्वक करना चाहिए। उसकी शांति प्रेम, समर्पण, धैर्य, त्याग और सहभागिता के माध्यम से प्रगट होती है।❖

व्यापक दृष्टिकोण

एक बार एक नवयुवक किसी शिक्षक के पास पहुंचा।

शिक्षक से- मैं अपनी जिन्दगी से बहुत परेशान हूं, कृपया इस परेशानी से निकलने का उपाय बताएं, युवक बोला।

शिक्षक बोले, 'पानी के ग्लास में एक मुठी नमक डालो और उसे पीयो।'

युवक ने ऐसा ही किया।' इसका स्वाद कैसा लगा?', शिक्षक ने पुछा।

' बहुत ही खराब एकदम खारा' – युवक थूकते हुए बोला।

शिक्षक मुस्कुराते हुए बोले, 'एक बार फिर अपने हाथ में एक मुठी नमक लेलो और मेरे पीछे -पीछे आओ । '

दोनों धीरे -धीरे आगे बढ़ने लगे और थोड़ी दूर जाकर स्वच्छ पानी से बनी एक झील के सामने रुक गए।

' चलो, अब इस नमक को पानी में दाल दो।' , शिक्षक ने निर्देश दिया। युवक ने ऐसा ही किया।

'अब इस झील का पानी पियो. ', शिक्षक बोले। युवक पानी पीने लगा, एक बार फिर शिक्षक ने पूछा, 'बताओ इसका स्वाद कैसा है, क्या अभी भी तुम्हे ये खरा लग रहा है?" नहीं, ये तो मीठा है, बहुत अच्छा है' युवक बोला ।

शिक्षक युवक के बगल में बैठ गए और उसका हाथ थामते हुए बोल, ' जीवन के दु:ख बिलकुल नमक की तरह हैं, न इससे कम ना ज्यादा। जीवन में दु:ख की मात्रा वही रहती है, बिलकुल वही। लेकिन हम कितने दु:ख का स्वाद लेते हैं ये इस पर निर्भर करता है कि हम उसे किस पात्र में डाल रहे हैं। इसलिए जब तुम दुखी हो तो सिर्फ इतना कर सकते हो कि खुद को बड़ा कर लो गलास मत बने रहो झील बन जाओ।❖

भागवत कथा के चंदे से गांव में बनेंगे 260 शौचालय

ये विशेष भागवत कथा है जो धार्मिक लाभ से अधिक भौतिक लाभ के लिए की गई। दरअसल, इस भागवत कथा सप्ताह में आए चढ़ावे-चंदे से गांव में शौचालय बनाए जाएंगे। गांव गंदगीमुक्त होगा, साथ ही छवि भी सुधरेगी। तीन प्रवेश रास्तों के मुहानो पर अभी हालत ऐसी है कि वहां से गुजरने वाला मुंह ढंकने को विवश हो जाता है। सूरत के कामरेज गांव में कथा सप्ताह ने जब विराम लिया तब तक 10 लाख रूपए जमा हो चुके थे। इससे 17 हजार की जनसंख्या वाले कामरेज गांव में 260 शौचालय बनाने का लक्ष्य है। छह महीने में इन्हें तैयार कर लिया जाएगा। ग्रामीणों की ओर से शौचालय निर्माण हेतु भागवत कथा के विचार सुनते ही छोटे मुरारी बापू कथा के लिए तैयार हो गए थे। उन्होंने कहा कि- वे अभी तक देश-विदेश में 666 कथाएं कर चुके हैं। कामरेज गांव का ये कथा सप्ताह इन सब में अनोखा है। शौचालय निर्माण हेतु फंड जुटाने के उद्देश्य में मैंने पहली बार कथा की। विदेश में रह रहे भक्तों से भी उन्होंने अपील की कि नए मंदिरों के बदले अग्रणी और एनआरआई को गरीबों के लिए शौचालय निर्माण हेतु योगदान देना चाहिए।❖

200 वर्षो से मांस मदिरा से दूर एक गांव

चतरा जिले का एक छोटा सा गांव है अम्बातरी। 200 वर्षों से इस गांव में मांस मदिरा का सेवन नहीं करने की परम्परा निभाई जा रही है। इस छोटे से गांव की आबादी 1000 के करीब है जहां सभी जाति और समुदाय के लोग रहते हैं। गांव के लोग लहसुन व प्याज का भी सेवन नहीं करते। गांव के बुजुर्गों के अनुसार गांव में दो सौ वर्ष पहले ठाकुर बाड़ी की स्थापना हुई थी, तभी से किसी ने भी मांस व मदिरा को हाथ नहीं लगाया। निश्चित रूप से गांव की यह परम्परा अन्य क्षेत्रों के लिए प्रेरणा देने वाली है, साथ ही यह गांव सभ्य समाज को नशा मुक्ति की राह भी दिखा रहा है। पंचायत के मुखिया रामलखन बैठा कहते हैं कि गांव पूरी तरह से वैष्णवी है और मांस मदिरा का सेवन नहीं कर यहां की परम्परा का निर्वहन ग्रामीण जिम्मेवारी पूर्वक कर रहे हैं। मुख्यमंत्री द्वारा नशा मुक्त पंचायतों को 100000 रूपए देने की घोषणा का लाभ पंचायत को मिलने वाला है।❖

संस्कृतं वदाम् (पंचम् पाठः)

वार्तालापः यात्रा प्रत्यागमनम्

कदा आगतवान्	कब आए?
कथम् आसीत् प्रवासः?	यात्रा कैसी रही?
प्रवासे व्यवस्था समीचीना आसीत् किम्।आम् सम्यक् एवासीत्	प्रवास में व्यवस्था कैसी रही? हां ठीक ही थी।
कति दिनानां प्रवासः?	कितने दिनों की यात्रा थी?
दिनत्रयं तत्र स्थितवान्	तीन दिन वहां रहा।
बहु भान्तः अस्मि भोः	अरे बहुत थक गया हूं।
मार्गमध्ये एका दुर्घटना संजाता।	रास्ते में एक दुर्घटना हुई।
यानस्य अग्रे सहसा पशूनां समुहः आगतः।	गाड़ी के सामने अचानक पशुओं का समूह आ गया था।
विशेषतया न कोऽपि आहतः	किसी को गहरी चोट नहीं आई।

शब्दकोषः (वृक्षवर्गः)

अश्वत्थः (पु.)	पीपल	देवरारूः (पु.)	देवदार
शाल्मलिः (पु.)	सेमल	भद्रदारूः (पु.)	चीड़
अशोकः (पु.)	अशोक	वंशः (पु.)	बांस
वटः (पु.)	बड़	तालः (पु.)	ताड़
निम्बः (पु.)	नीम	एरण्डः (पु.)	एरंड

व्याकरणम्

हिन्दी के समान ही संस्कृत में भी तीन काल होते हैं।

वर्तमान काल, भूतकाल तथा भविष्यकाल।

वर्तमान काल के लिए लट् लकार का प्रयोग होता है। हो रहा है, होता है, खा रहा है, खाता है, है, हो, हूं इत्यादि का वर्तमान काल में प्रयोग होने के कारण इनके लिए लट् लकार का प्रयोग होता है। यथा–

बालक विद्यालय जाता है	बालकः विद्यालयं गच्छति।
मैं पाठ पढ़ता हूं	अहम् पाठं पठामि।
तुम कहां जाते हो	त्वं कुत्र गच्छति?
लड़कियां नाचती हैं	बालिकाः नृत्यन्ति
हम जा रहे हैं	वयं गच्छामः
तुम लोग क्या करते हो	यूयम् किं कुरूथ।

विशेषः

संस्कृत में वर्तमान काल के खाता है, खा रहा है, जाता है, जा रहा है, हंसता है, हंस रहा है, इत्यादि दोनों प्रकार के वाक्यों के लिए लट् लकार का ही प्रयोग होता है। यथा–

बालक खाता है/खा रहा है	बालकः खादति
वे जाते हैं/ जा रहे हैं	ते गच्छन्ति इत्यादि

संस्कृत का अध्यन करेंगे चीन के विद्वान

संस्कृत भाषा सीख कर करेंगे वेदों का अध्यन।

चीन की नई पीढ़ी में संस्कृत भाषा को सीखने के लिए उत्साह बढ़ रहा है। 60 चीनी बुद्धिजीवियों ने बुद्धिस्ट संस्थान के एक समर कैंप में नाम लिखाया है। संस्कृत सीखकर ये बुद्धिजीवी प्राचीन संस्कृत के ज्ञान को अर्जित करना चाहते हैं। ये लोग चीन के हांगजाऊ बुद्धिज्म संस्थान में छह दिन तक संस्कृत का अध्यन करेंगे। जर्मनी की माइंज युनिवर्सिटी से इंडोलॉजी में डाक्टरेट ली वी संस्कृत पढ़ाएंगे।

चीन की पीकिंग युनिवर्सिटी में संस्कृत के लिए एक अलग विभाग है। जिसमें साठ से ज्यादा छात्र संस्कृत का अध्यन करते हैं। जाने माने इंडोलोजिस्ट जी जियालिन को संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए पद्मश्री से भी नवाजा जा चुका है। संयुक्त राष्ट्रसंघ द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित होने के बाद से चीन के लोगों में संस्कृत सीखने की इच्छा बढ़ी है।

इस तरह भारत से चीन पहुंची संस्कृत भाषा

बताया जाता है कि छठी शताब्दी में चीन के जुआन जांग ने भारत की यात्रा की थी वे 17 वर्ष तक भारत रहे थे। उन्ही के जरिए संस्कृत चीन पहुँची। तभी से चीन में संस्कृत की उपयोगिता बढ़नी शुरू हुई। फाहयान, हयूनसांग आदि कई और भिक्षुओं ने भी भारत यात्रा की और प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धति का ज्ञान अर्जित किया।

साभार दिव्य हिमाचल

जरूरी है कि हम अपराधियों को 'महिमामंडित' करने से बाज आएं

सोशल मीडया पर दो मौतें वायरल हो गई। भारत के पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम और सन् 1993 में भारत को दहला देने वाले मुम्बई विस्फोटों के साजिशकर्ता याकूब मेनन। समाचार कुछ इस तरह से प्रस्तुत किया गया जैसे आज का दिन बहुत महत्वपूर्ण है। दो आत्माओं को दफन किया जाएगा/दोनों का संबंध मिसाइलों से था। एक ने हमारे राष्ट्र का सिर गर्व से ऊंचा किया। दूसरे को अपना सिर शर्म से झुकाना पड़ा। एक का तो नेक मिशन था। दूसरे का उद्देश्य केवल धूर्तता थी। एक व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने वालों का तांता लगा हुआ है। एक हमारे देश का राष्ट्रपति बना। दूसरे की आखिरी उम्मीद ही राष्ट्रपति थे। भारत के राष्ट्रपति ही वास्तव में मेमन की आखिरी उम्मीद थे, जिन्होंने सरकार के परामर्श पर उसकी दया याचिका ठुकरा दी और उसकी फांसी का रास्ता रोकने से इन्कार कर दिया। मेमन को सन् 1993 के श्रृंखलाबद्ध मुबई धमाकों का वित्त पोषण करने के दोष में सन् 2007 में सजा हुई थी। उसके भाई टाइगर और अंडरवर्ल्ड डान दाऊद इब्राहिम ही इन धमाकों के मास्टर माइंड थे। वे आज तक भगौड़े हैं। याकूब अब्दुल रज्जाक मेमन की कहानी 90 के दशक से शुरू होती है, जब भारत की वित्तीय राजधानी को बम धमाकों ने तार-तार कर दिया था। मेमन बंधुओं में से तीसरा याकूब मेमन एक प्रशिक्षित चार्टर्ड अकाऊंटैंट था और उसने कई कारोबार चला रखे थे। फिर भी पुलिस रिकार्ड में उसे सबसे अधिक पढ़ा-लिखा और सबसे अधिक चुस्त-चालाक अपराधी माना गया था। वित्तीय सफलता के बूते याकूब ने सम्पत्ति व्यवसाय में बड़े पैमाने पर निवेश शुरू कर दिया लेकिन उसके वित्तीय सौदे संदिग्ध थे, खास तौर पर बड़े-बड़े सौदे। याकूब को अपने भाई टाइगर की पत्नी शबाना सहित पूरे परिवार के खाते आप्रेट और हैंडल करने के लिए अधिकृत किया गया था। ऐसे साक्ष्य मिले थे कि इस पैसे का काफी बड़ा हिस्सा मुम्बई आधारित धमाकों के आरोपियों तक पहुंचाया गया था। इन श्रृंखलाबद्ध धमाकों में 200 से अधिक लोगों की जाने गई थी और पूरा मुम्बई लहूलुहान हो गया था। पुलिस ने याकूब के सिर पर ईनाम घोषित किया था और तभी से वह भगौड़ा हो गया था। उसके सामने विकल्प बहुत सीमित थे। या तो पाकिस्तान में एक भगौड़े का जीवन व्यतीत करता रहे या फिर भारतीय जांच एजेंसियों के साथ सौदेबाजी कर ले या मुकद्दमें का सामना करे और खुद को निर्दोष सिद्ध करे। उसने भारतीय अधिकारियों को बस इस बात पर संतुष्ट कराना था कि सिवाय टाइगर के उनके परिवार में से और किसी का मुम्बई धमाकों में हाथ नहीं था। यह तो कहा नहीं जा सकता कि ऐसा संयोगवश हुआ या योजनाबद्ध तरीके से, लेकिन याकूब काठमांडू हवाई अड्डे पर उस समय दबोचा गया जब वह कराची जाने वाले विमान पर सवार हो रहा था। यह जुलाई 1994 की बात है। भारत ने इस गिरफ्तारी का पूरा-पूरा लाभ लेते हुए मुम्बई धमाकों में पाकिस्तान की संलिप्तता पर उंगली उठाई। इस विषय पर काफी अटकलें लगती रही हैं कि लगातार निगरानी के बावजूद याकूब का पाकिस्तान से विमान द्वारा बाहर निकलना कैसे संभव हुआ। यही वह मुद्दा है, जहां भारतीय जांच एजैंसियों के साथ सौदेबाजी की यह कहानी प्रासंगिक बनती है कि या तो उसे बख्श दिया जाएगा या फिर मामूली सी सजा दी जाएगी। वैसे सी.बी.आई. ने बहुत जोर-शोर से इस कहानी से इन्कार किया। लंबी कानूनी लड़ाई ने धीरे-धीरे याकूब के फांसी के तख्ते तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया। सन् 1995 में शुरू हुए मुकद्दमे ने याकूब की किस्मत का ताला बंद कर दिया। उसे मौत की सजा दी गई और इस पर स्वीकृति की अंतिम मोहर तब लगी जब राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने उसकी दया याचिका एक बार नहीं बल्कि दो बार रद्द कर दी। सुप्रीम कोर्ट के दो न्यायाधीशों की खंडपीठ द्वारा मेमन की याचिका पर खंडित फैसला सुनाए जाने के बाद शीर्षस्थ अदालत ने तीन जजों की खंडपीठ स्थापित की। इस खंडपीठ ने भी मेमन की याचिका रद्द कर दी। इस तरह उसे लिए कानूनी सहायता की सभी संभावनाएं समाप्त हो गई।

लेकिन जुलाई में मेमन ने एक बार फिर दया याचिका दायर की लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इसे भी ठुकरा दिया। अनेक राजनीतिज्ञ, न्यायविद और सिविल सोसाइटी के सदस्य मेमन को क्षमादान दिलाने के लिए सक्रिय हो गए। उन्होंने राष्ट्रपति से गुहार लगाई कि उसे जीवनदान दिया जाए। इस याचिका पर हस्ताक्षर करने वालों में भाजपा सांसद शत्रुघ्न सिन्हा, माकपा नेता सीताराम येचुरी, कांग्रेस के मणिशंकर अय्यर, प्रसिद्ध वकील राम जेठमलानी और बालीवुड से नसीरूद्दीन शाह व महेश भट्ट जैसे लोग शामिल थे। उन्होंने राष्ट्रपति को इस आधार पर गुहार लगाई कि 'इन्सानी जान लेने से' भारत की छवि दागदार होगी और 'क्षमादान' से सही संदेश जाएगा। क्षमादान देने की आवश्यकता ने इन हस्ताक्षरकर्ताओं की बुद्धि पर ऐसा पर्दा डाला हुआ था कि धमाकों में मारे गए परिवारों के लोग जो लंबे समय से इन्साफ की प्रतीक्षा कर रहे थे, उन पर क्या बीतेगी? इन बेकसूर लोगों पर जो अत्याचार याकूब और उसकी जुंडली ने किया था, उन अपराधों की लंबी शृंखला का यह फांसी प्रथम प्रतिकार थी। फिर एक्टर सलमान खान भला ऐसे में किस तरह पीछे रह सकते थे। उन्होंने भी ट्वीट किया कि याकूब को फांसी नहीं होनी चाहिए। याकूब का बचाव करते हुए उसके भाई टाइगर को फांसी पर चढ़ाने की वकालत करते हुए सलमान ने कहा: 'टाइगर को फांसी पर लटकाओ। उसके गुनाह के लिए छोटे भाई को क्यों फांसी दी जाए। टाइगर कहां है?उसे ढूढो और उसके गले में फंदा डालो।'

एक अन्य ट्वीट में सलमान खान ने कहा 'किधर छिपा है टाइगर?है कोई टाइगर?नहीं है। वो तो बिल्ली है और हम एक बिल्ली को नहीं पकड़ सकते।' एक अन्य ट्वीट में सलमान खान ने प्रधानमंत्री नवाज शरीफ को कहा कि यदि टाइगर पाकिस्तान में हो तो उसे भारत भेजा जाए। 'शरीफ साहिब! एक दख्र्वास्त है कि अगर वह आपके मुल्क में है तो प्लीज इतिलाह कर दीजिए।'

फिर भी लोगों के नाराजगी भरे प्रदर्शनों के मद्देनजर सलमान खान को अपने शब्द वापस लेने पड़े और कुछ ठंडे हुए सलमान ने दोबारा ट्वीट किया, 'मेरे अब्बा जान ने मुझे फोन किया और कहा कि मैंने जो ट्वीट किए हैं, उन शब्दों को वापस लूं।' सलमान के पिता सलीम खान बालीवुड के जाने-माने पटकथा लेखक हैं। अपने बेटे को याकूब मेमन का समर्थन करता देख वह बहुत आग-बबूला हुए। उन्होंने कहा कि सलमान पूरे मुद्दे से अनभिज्ञ है और लोगों को उसकी बातें गंभीरता से नहीं लेनी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने दिशा-निर्देश जारी कर रखा है कि 'दुर्लभ से दुर्लभतम' मामलों में ही मृत्युदंड दिया जाना चाहिए। कुछ भी हो, याकूब मेमन को फांसी को धुरी बनाकर इसके गिर्द यह बहस भड़काना न केवल न्याय का मजाक है बल्कि न्याय प्रणाली को गच्चा देने का प्रयास भी है। मेमन की फांसी पर छाती पीटने वालों को इस तथ्य को मद्देनजर रखने की जरूरत है कि यह शायद एकमात्र ऐसा मामला था जिस पर सुप्रीम कोर्ट बड़े तड़के तक सुनवाई करती रही, यानी कि याकूब की फांसी से केवल 3 घंटे पहले तक। यह पहला मामला था जब प्रात: 3 बजे याकूब मेमन को 1993 के मुम्बई धमाकों में भूमिका के लिए दी जाने वाली फांसी के विरूद्ध याचिका पर सुनवाई करने के लिए सुप्रीम कोर्ट के दरवाजे खोले गए थे। भारतीय न्याय प्रणाली की निष्पक्षता का मेमन के समर्थक इससे बड़ा प्रमाण और क्या चाहते हैं?किसी भी फैसले के लिए दो दशक तक इंतजार करना सचमुच बहुत लंबी अवधि है। फिर भी अगले दिन की अखबारें देखकर सदमा ही लगा था। अखबारों के मेमन की फांसी और कलाम की मृत्यु के समाचार अलग-बगल में प्रकाशित किए थे। अधिकतर मामलों में मेमन की फांसी की समाचार को न केवल अधिक स्थान दिया गया, बल्कि उसे वरीयता भी दी गई। वैसे कोई भी यह वकालत नहीं कर सकता कि याकूब और कलाम में कोई एक बात भी सांझी थी। वैसे तो दोनों में किसी तरह की तुलना की ही नहीं जा सकती, इसीलिए यह जरूरी है कि हम अपराधियों को महिमामंडित करने से बाज आएं और अपराधियों को फांसी के फंदे तक पहुंचाने वाले कानूनी विशेषज्ञों पर उंगली उठाना बंद करें। जब हमें खून-खराबे और बंदूकों से चुनौती दी जा रही हो तो मृत्युदंड को समाप्त करने अथवा याकूब को क्षमा दान देने जैसी बातें पूरी तरह अर्थहीन और अवांछित हैं।❖

बेनकाब हुआ पाक का नापाक चेहरा, पाक में ही रची गई थी मुंबई अटैक की साजिश

मुंबई पर 26 नवंबर, 2008 को हुए आतंकवादी हमले में पाकिस्तान की भूमिका की पोल-पट्टी खुद एक पाकिस्तानी सेवानिवृत अधिकारी ने खोल दी है। उसने साफ कहा है कि पाकिस्तान को इस जघन्य नरसंहार में अपनी गलती स्वीकार कर लेनी चाहिए। यह बात किसी आम पाकिस्तानी ने नहीं, बल्कि वहां की संघीय जांच एजेंसी (एफआईए) के पूर्व निदेशक जनरल तारिक खोसा ने कही है। खोसा ने समाचार पत्र डॉन में प्रकाशित अपनी टिप्पणी में लिखा है, मुंबई की घटना से पाकिस्तान को निपटना है। इसकी साजिश पाकिस्तान की धरती पर रची गई थी और इसे यहीं से लांच किया गया था। पाकिस्तान को हर हाल में मान लेना चाहिए कि उसने पाकिस्तानी आतंकवादियों को समुद्र के रास्ते मुंबई तक पहुंचने देने की गलती की थी। इसके लिए जरूरी है कि सच का सामना किया जाए और अपनी गलती मान ली जाए।❖

श्री श्री रविशंकर को पेरू का सर्वोच्च सम्मान

भारत के अग्रणी तथा विश्वप्रख्यात धर्मगुरू एवं समाजसेवी श्री श्री रविशंकर को दक्षिण अमेरिकी देश पेरू के सर्वोच्च सम्मान 'ग्रैंड ऑफिसर' से नवाजा गया है। उन्हें यह सम्मान 'आर्ट ऑफ लिवंग' संस्थान द्वारा किए गए समाज सेवा एवं शांति कार्य के लिए दिया गया है। पेरू की राजधानी में संसद ने श्री श्री रविशंकर को 'मेडाला दे ला इंटीग्रेसियों एन ला ग्रेदों दे ग्रां ऑफिशियल' सम्मान प्रदान किया। उनकी आर्ट ऑफ लिविंग संस्थान द्वारा दुनियाभर में शांति, सद्भावना, समाज सेवा तथा योग के कार्यक्रम करवाए जाते हैं। इन सबके अतिरिक्त वे लगातार युद्धग्रस्त इलाकों में भी मानवता के कार्य करवाते रहे हैं जैसे कुछ ही दिनों पहले वे इराक और सीरिया गए थे और इस्लामिक स्टेट के आतंक से ग्रस्त लोगों को मदद पहुंचाई थी।❖ **साभार संघ मार्ग**

अमेरिका की भव्य इमारत पर दिखाया गया मां काली का रौद्र रूप

न्यूयॉर्क की एंपायर स्टेट बिल्डिंग पर 'काली मां' की विशाल कलाकृति को प्रदर्शित किया गया। 381 मीटर ऊंची इस इमारत पर अलग-अलग लाइटिंग से मां काली के भव्य रूप को दिखाया गया। काली मां का पोर्ट्रेट बनाने वाले एंड्रयू जोन्स के मुताबिक, वह इसके माध्यम से लोगों को यह बताना चाहते हैं कि मां प्रकृति को प्रदूषण व जानवरों के लुप्त होने की समस्या से लड़ने के लिए रौद्र रूप अपनाना पड़ रहा है।❖

भारतीय मूल की पत्रकार को कनाडा में मिला सर्वश्रेष्ठ पत्रकार का पुरस्कार

ओटावा में भारतीय समुदाय के लोगों ने एक भारतीय-कनाडाई महिला पत्रकार को पत्रकारिता के क्षेत्र में उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए पुरस्कार से नवाजा है। टोरंटो सन की संपादक एड्रियन बत्रा (41) को इस साल के प्रवासी पुरस्कार समारोह में सर्वश्रेष्ठ पत्रकार के रूप में मान्यता दी गई जिसमें मिल्खा सिंह अतिथि के रूप में शामिल थे। प्रवासी पुरस्कार की स्थापना सन् 2005 में हुई थी जिससे कि विभिन्न क्षेत्रों में सफल पंजाबी-कनाडाइयों को सम्मानित किया जा सके।❖

सन् 2020 तक दुनिया पर कब्जा करने की तैयारी कर रहा आईएस

इराक और सीरिया में सक्रिय आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट ने अपना प्लान 2020 तैयार किया है। इसके तहत आतंकी संगठन आईएस यूरोप, चीन, भारत और उत्तरी अफ्रीका के कुछ इलाकों तक फैलना चाहता है। इसके लिए उसने अपने कब्जे वाले देशों का एक नया मैप भी जारी किया है। बीबीसी के एक पत्रकार एंडर्यू हॉस्केन ने नई किताब 'इम्पायर ऑफ फियर इनसाइड द इस्लामिक स्टेट' लिखी है। इस किताब में इस्लामिक स्टेट के उस मैप को प्रकाशित किया गया है, जिसमें उसने आने वाले पांच सालों में कब्जा करने की योजना बनाई है।❖

सुरक्षा बलों ने लिया बदला

शहीद हेमराज और सुधाकर का सिर कलम करने वाले आतंकी को मार गिराया

जम्मू कश्मीर के मेंढर से लगी सीमा पर सेना के जवानों ने मुठभेड़ में एक आतंकवादी को मार गिराया है। यह वही आतंकी है जिसने पाकिस्तान रेंजर्स के साथ मिलकर हमारे जवान हेमराज और सुधाकर का सिर कलम कर दिया था। मारे गए आतंकी का नाम अनवर बताया जा रहा है। वह पाकिस्तान के हजीरा गांव का रहने वाला था। सेना ने उसे तब मार गिराया जब वो हमारी सीमा में घुसपैठ की कोशिश कर रहा था। सेना ने घटनास्थल के पास से भारी मात्रा में गोला-बारूद बरामद किया है। सेना के प्रवक्ता ने बताया कि देर रात हेल्मेट पोस्ट के पास चार-पांच आतंकियों ने भारतीय सीमा में प्रवेश किया। सेना ने नाइट विजन डिवाइसेज से उसकी पुष्टि की। आतंकियों ने जवानों पर अंधाधुंध फायरिंग शुरू कर दी। जवानों ने भी उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया। मुठभेड़ तड़के तीन बजे से पौने चार बजे तक चली। जवानों की ओर से की गई कार्रवाई में एक आतंकवादी मारा गया जबकि बाकी वापस पाकिस्तान भागने में सफल रहे।❖

भारत से बांग्लादेश में हो रही गो-तस्करी पर रोक

मोदी सरकार ने शासनकाल के एक साल में बांग्लादेश की सीमा पर पहरा दे रहे करीब 30000 सैनिकों को एक और जिम्मेदारी दे दी है। यह जिम्मेदारी मुस्लिम बहुल पड़ोसी देश में अवैध रूप से गाय की तस्करी को रोकना है। करीब-करीब हर दूसरी रात बांस की छड़ी और रस्सी हाथ में लिए सैनिक जूट और धान के खेतों में दौड़ते नजर आते हैं और तालाबों में तैरकर बांग्लादेश की मार्केट की ओर गाय, बछड़े या बैल आदि लेकर जा रहे तस्करों का पीछा करते हैं। इस साल बीएसएफ ने अब तक 90000 मवेशी पकड़े हैं और 400 भारतीय एवं बांग्लादेशी तस्करों को भी पकड़ा है।❖ साभार संघ मार्ग

ARNI UNIVERSITY
अर्नी विश्वविद्यालय
काठगढ़, तहसील इन्दौरा, जिला कांगड़ा (हि०प्र०)
शिक्षा में सर्वागिण विकास में सतत प्रयासरत हिमाचल देवभूमि का अग्रणी विश्वविद्यालय।

1. बालिका उच्च शिक्षा हेतु 50% फीस में छूट।
2. हिमाचल निवासीयों के छात्रो को 25% फीस में छूट।
3. प्रदेश का वृहद विश्वविद्यालय।
4. वातानूकूलित कक्षाएं।
5. Wi-Fi प्रांगण।
6. अनूसूचित जाति, अनूसूचित जनजाति व अन्य पिछड़ा वर्ग को केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के द्वारा प्रयोजित कार्यक्रम के अनुसार निशुःल्क शिक्षा।
7. छात्र एवं छात्राओं के लिए पृथक छात्रावास की सुविधा।
8. रैगिंग मुक्त विश्वविद्यालय।
9. किताबों से सुस्जजित पुस्तकालय।
10. यातायात की सुविधा।
11. विद्यार्थियों के सर्वागिण विकास हेतु खेल के मैदान।

20 kms from Pathankot on Jalandhar Road

UNDER GRADUATE COURSES
* B.Tech in Civil, ME, ECE, EEE, CSE, Biotech & Automobile.
* Bachelor of Business Administration (BBA).
* Bachelor of Hotel Management and Catering Technology (BHMCT).
* Bachelor of Computer Application (BCA).
* B.Com & B.Com (Hons).
* B.Sc Non-Medical, Medical, Biotechnolgy & Microbiology.
* B.Sc (Hons) in Physics, Chemistry & Mathematics.
* BA & BA (Hons) in English, Economics

POST GRADUATE COURSES
* Master of Business Administration (MBA).
* Master of Computer Application (MCA).
* M.Tech in CSE, ME, EEE, Biotech & Civil.
* M.Sc. in Mathematics, Physics, Chemistry, Biotechnology, Microbiology, Botany & Zoology.
* M.A. English, Economics.
* M.Com.

SMS "ARNI" to 53030

ARNI UNIVERSITY
Campus: Kathgarh (Indora), Distt. Kangra (H.P.)-176401
Mob: 09888599102, 09888599129
Phone No: 01893-302000, Tollfree No: 1800-200-0049
Website: www.arni.in, www.arni.edu.in, Email: info@arni.in

आतंक के खिलाफ जीजा-साले की दिलेरी को सलाम

जम्मू कश्मीर के उधमपुर में हमला करने वाले आतंकी की गिरफ्त में होने के बावजूद जीजा-साले की बहादुर जोड़ी ने हिम्मत नहीं हारी और खूंखार आतंकी को धर दबोचा। दोनों की इस दिलेरी को आज सारा देश सलाम कर रहा है। 5 अगस्त को जब एक आतंकी को सुरक्षा बलों ने ढेर कर दिया तो दूसरा आतंकी मौका देखकर वहां से भाग निकला। मौत के डर से थर्राए आतंकी कासिम ने पहले दो लोगों को राइफल से धमकाकर रास्ता दिखाने के लिए अपने साथ लिया। पहाड़ी पर आगे पहुंच कर दो और युवा (जीजा-साले) को बंदूक दिखाकर कब्जे में कर लिया। आगे चलकर रास्ते में एक ओर व्यक्ति को वह गांव चिरडी तक ले गया। इस तरह से कुल पांच लोगों को कासिम ने बंधक बनाया। इसी दौरान जीजा-साले ने आतंकी को करीब आधे घंटे तक दबोचे रखा तथा मौके पर पहुंचे सुरक्षा बलों की टीमों के हवाले किया। आतंकी के साथ आपबीती सुनाते हए साले राकेश कुमार शर्मा और बहनोई विक्रम जीत शर्मा ने बताया कि सुबह साढ़े सात बजे उन्हें जब गोलियों की आवाज सुनाई दी तो वे घर के बाहर आ गए। धुंध में कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। करीब आठ बजे एक आतंकी दो लोगों को किडनैप कर उनके घर के पास पहुंचा और उन्हें भी बंदूक दिखाकर अपने साथ ले गया। रास्ते में एक व्यक्ति जो उधमपुर की ओर जा रहा था, उसे भी अपने साथ चलने को कहा। करीब चार किलोमीटर दूर जाकर उसने खाना खाकर पानी पिया। इस दौरान आतंकी ने रास्ते में ही उनके मोबाइल भी बंद करवा दिए ताकि कहीं लोकेशन पता न चल जाए। आतंकी अपने आपको पाकिस्तानी बता रहा था। उन्होंने बताया कि हेलीकॉप्टर की आवाज आने पर आतंकी ने उन्हें जंगल की तरफ ले जाने की बात कही। जंगल की तरफ पहुंचकर पंद्रह मिनट तक वहां बैठे रहे। बंधक बने पांचों लोग आपस में आंखों से इशारा कर उसे पकड़ने की सोच रहे थे, लेकिन जंगल में बैठने के बाद जब आवाजें आईं तो आतंकी ने अपनी गन उठा ली। इसी बीच मौका पाकर तीन लोग जान बचाकर भाग निकले। अब बचे राकेश शर्मा और विक्रम जीत शर्मा ने आंखों ही आंखों में इशारा किया और कासिम पर टूट पड़े। साले ने आतंकी को गर्दन और बाजू से करीब आधे घंटे तक जकड़े रखा। उसने इन्हें गोली मारने की कोशिश भी की। गुथमगुत्था में एक फायर भी निकला लेकिन इससे किसी को नुकसान नहीं हुआ। करीब आधा घंटे तक उनमें जोर-आजमाइश चलती रही। इसी बीच सुरक्षा बल के जवानों ने वहां पहुंचकर आतंकी को कब्जे में ले लिया।❖

सर्वाधिक उन्नत देश करते हैं मातृभाषा में व्यवहार

– श्रीमती मीनाक्षी सूद

किसी भी पराधीन राष्ट्र की आजादी की आशा तभी की जा सकती है अगर वह अपने देश की भाषा से प्रेम करता है। मातृभूमि और मातृभाषा से प्रेम करके ही राष्ट्र को परम वैभव की स्थिति तक पहुँचाया जा सकता है। दुनिया के सभी विकसित देश अपनी मातृभाषा में प्राथमिक तथा उच्च शिक्षा दे रहे हैं।

चीनी बच्चे मंदारिन और इजाराइली बच्चे हिब्रू में ज्ञान प्रपप्त कर रहे हैं। जापानी, रूसी, कोरियाई, फ्रांसीसी, जर्मन सभी अपनी मातृभाषा में बच्चों का मस्तिष्क गढ़ रहे हैं, जबकि भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, कांगो इथियोपिया, बुरूंडी, युगांडा, नाइजीरिया, चाड, मोजाम्बिक, माली, अंगोला, रवांडा, कंबोडिया तंजानिया जैसे देश अपने पूर्व युरोपीय शासकों की भाषाओं को सर माथे लिए हुए हैं। दुनिया के 20 देश अपनी भाषा पर गर्व कर रहे हैं, जबकि तरक्की में सबसे निचले पायदान के देश विदेशी भाषाओं में व्यवहार कर रहे हैं। विश्व के सर्वाधिक पिछड़े देश अपनी मातृभाषा के स्थान पर विदेशी भाषा का उपयोग करते हैं व विश्व के सर्वाधिक उन्नत देश अपनी मातृभाषा में व्यवहार करते हैं व मातृभाषा में ही शिक्षा देते हैं।

चीनी बच्चे मंदारिन और इजाराइली बच्चे हिब्रू में ज्ञान प्रपप्त कर रहे हैं। जापानी, रूसी, कोरियाई, फ्रांसीसी, जर्मन सभी अपनी मातृभाषा में बच्चों का मस्तिष्क गढ़ रहे हैं, जबकि भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, कांगो इथियोपिया, बुरूंडी, युगांडा, नाइजीरिया, चाड, मोजाम्बिक, माली, अंगोला, रवांडा, कंबोडिया तंजानिया जैसे देश अपने पूर्व युरोपीय शासकों की भाषाओं को सर माथे लिए हुए हैं। दुनिया के 20 देश अपनी भाषा पर गर्व कर रहे हैं, जबकि तरक्की में सबसे निचले पायदान के देश विदेशी भाषाओं में व्यवहार कर रहे हैं। विश्व के सर्वाधिक पिछड़े देश अपनी मातृभाषा के स्थान पर विदेशी भाषा का उपयोग करते हैं व विश्व के सर्वाधिक उन्नत देश अपनी मातृभाषा में व्यवहार करते हैं व मातृभाषा में ही शिक्षा देते हैं।

हिन्दी भाषा की अपनी विशेषता व अपना आकर्षण है। लोकमान्य बालगंगाधर तिलक अंग्रेजी में शिक्षा प्राप्त करने के बाबजूद भी गीता के अच्छे जानकारों में से एक थे। प्राचीनकाल में महान ऋषि मुनि इसी भाषा के ज्ञान से महान कहलाते हैं। गोस्वामी तुलसीदास और आदि गुरू शंकराचार्य जैसे महान ऋषियों ने इसी भाषा के माध्यम से विश्व भर में भारतीय संस्कृति का प्रचार किया।

महात्मा गांधी कहते थे कि अंग्रजी भाषा भारतीय छात्रो की 99 प्रतिशत उर्जा को हर देती हैं। आजादी के बाद वे अपनी राष्ट्र भाषा में ही शिक्षा के पक्षधर थे। लेकिन आजाद भारत के अंग्रेजी मानसिकता वाले राजनेताओं ने अपनी राष्ट्र भाषा को ही हाशिए पर ला खड़ा कर दिया जिसके कारण आजादी के सात दशक बीतने के बाद भी समूचा देश विदेशी भाषा को ढ़ोता फिर रहा है।

विश्व भर में आज हिन्दी बोलने वालों व जानने वालों का चौथा स्थान है। 310 मिलियन लोग आज भी इस भाषा के बारे में जानते हैं। विश्व भर की लगभग 703 करोड़ की आबादी मे से 17 प्रतिशत लोग हिन्दी भाषा के लिए सर्मपित हैं।

यदि अपने देश की बात की जाए तो लगभग 128 करोड की आबादी में से लगभग (50) करोड लोग न केवल हिन्दी बोलते लिखते ही नहीं समझते भी हैं। समझने वालों की संख्या इससे कहीं अधिक हैं। भारत, नेपाल, पाकिस्तान,

अफगानिस्तान,बंगलादेश सहित विश्व के बाकी देशों भी जहॉ भारतीय रहते हैं वहॉ हिन्दी भाषा का प्रचार हो भी रहा है व इसकी आवश्यकता भी महसूस की जा रही है।

भला अपनी मॉ, माटी से कौन दूर रह सकता है। इंन्सान अपने जीवनयापन के लिए कीं भी जाए लेकिन अपने घर ऑगन गली मोहल्ले की याद उसके साथ हमेशा ही जुड़ी रहती है। यही कारण है कि आज विश्व भर में रहने वाले भारतीयों को अपनी भाषा और संस्कृति से प्यार और भी गहरा होता जा रहा है। होली हो या दिवाली रक्षा बंधन हो या नया वर्ष, भारतीय सभी त्यौहारों को अपने ढंग से मनाता है और प्रत्येक देश में इन भारतीयों ने अपनी पहचान को बनाए रखा है। आज विश्व के प्रत्येक छोटे बड़े देश भारतीय संस्कृति को पहचानने लगे हैं तथा भारत के तीज त्योहारों को मनाने लगे हैं आज भारतीयों का ये दायित्व भी बनता है कि विश्व की चौथे स्थान की भाषा को सर्व्वोच्च स्थान पर ले जाएं। अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए, जानकारियां हासिल करने के लिए भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नहीं हो सकता कि हम भी अपने विवेक को खोकर उन्हीं के हो जाएं। यहां यह बात ध्यान में लाना आवश्यक है कि हम चाहे किसी भी देश व समाज में रहें, हमें प्रत्येक समाज को अपने अनुसार ढालना होगा। उन्नत भारत और भारत के भविष्य के लिए न केवल हिन्दी हमें विश्व भर में ले जानी होगी बल्कि विश्व शांति व बन्धुता के लिए भी इस सनातन का बने रहना अत्यंत आवश्यक है।❖

SHIVALIK HOSPITAL
Near Police Lines, Jhalera, Una (H.P.)
Mob.: 98059-33644

Dr. Akshay Sharma
MBBS (MAMC Delhi) (Gold Medalist)
MS (MAMC Delhi) Regd. MCI-7841
General & Laproscopic Surgeon
Ex. Senior Registrar LNJP &
GB Pant Hospital New Delhi

Dr. Anupma Sharma
MBBS, MD (PGI Chandigarh)
SKIN SPECIALIST
Regd. PMC-28190

Facilities Available: General & Specialist OPD, Indoor Admission Facilities, Fully equipped Operation Theatre, All Major & Minor Operations, Laproscopic Gall bladder Removal, Nebulization therapy for Asthma, ECG/X-Ray, Blood Tests.

शुभकामनाओं सहित

बाबा बाल जी

कोटला कलां
ज़िला ऊना
हिमाचल प्रदेश

नाबालिग स्वयंसेवक ने तोड़ा मुस्लिम मोर्चा

सुना में एक किलेनुमा हवेली थी जहां पर मुस्लिम लीगियों ने पक्का मोर्चा जमा रखा था। उनके पास हर तरह के आधुनिक हथियार थे। मोर्चा इतना पक्का था कि भारतीय सेना भी उसको तोड़ नहीं पा रही थी। सैनिक अधिकारी ने कहा कि जब तक हवेली के दरवाजे को आग नहीं लगाई जाती तब तक मोर्चा नहीं टूट सकता। अधिकारी की बात सुन कर सन्नाटा छा गया क्योंकि हवेली के चारों ओर भयंकर गोलाबारी हो रही थी। लेकिन यकायक एक 14 वर्षीय स्वयंसेवक ओमप्रकाश उठा और उसने कहा मैं इस हवेली का दरवाजा जलाऊंगा। इतना कह कर वह सैनिक अधिकारी से बम लेकर आगे बढ़ा, गोलियों की बौछार के बीच वह हवेली के दरवाजे तक पहुंच गया और विस्फोट कर दरवाजे को आग लगा दी। इस बीच एक पठान दो दुनाली बंदूक लेकर ओमप्रकाश पर झपटा परंतु शरीर में पठान से आधे ओमप्रकाश ने फुर्ती से पठान पर हमला कर उसे गिरा दिया। पठान के गिरते ही उसकी दुनाली बंदूक भी उससे छीन लाया। इस पर सैनिक अधिकारी ने वीर ओमप्रकाश को गले लगा लिया। सैनिक अधिकारी ने ओमप्रकाश को तत्काल सेना में नौकरी देने की घोषणा की, परंतु उसने यह कहते हुए नौकरी ठुकरा दी कि वह तो संघ को ही अपना जीवन समर्पित कर चुका है।❖

साभार: पथिक संदेश

सतयुग में विशालकाय मानव

हिन्दु पौराणिक मान्यताओं के अनुसार महाभारत काल तक सभी देवी-देवता पृथ्वी पर निवास करते थे। महाभारत के बाद सभी अपने-अपने धाम चले गए। कलयुग के प्रारंभ होने पर देवता विग्रह रूप अदृश्य में ही रह गए। अत: उनके विग्रहों की पूजा की जाती है। देवताओं की दैत्यों से प्रतिस्पर्धा चलती रहती थी। ऐसे में जब भी देवताओं पर घोर संकट आया तो वे सभी देवाधिदेव महादेव के पास जाते थे। दैत्यों, राक्षसों सहित देवताओं ने भी शिव को कई बार चुनौती दी, लेकिन वे सभी परास्त होकर शिव के समक्ष झुक गए इसीलिए भगवान शिव देवों के देव महादेव कहलाते हैं। वे दैत्यों, दानवों और भूतों के भी प्रिय भगवान हैं। हिन्दू धर्म की मान्यता के अनुसार सतयुग में विशालकाय मानव हुआ करते थे। बाद में त्रेतायुग में इनकी प्रजाति नष्ट हो गई। पुराणों के अनुसार भारत में दैत्य, दानव, राक्षस और असुरों की जाति का अस्तित्व था, जो इतनी ही विशालकाय हुआ करती थी। भारत में प्राचीन काल के ऐसे कई कंकाल के साथ एक शिलालेख भी मिला है। यह उस काल की ब्राहमी लिपि का शिलालेख है। इसमें लिखा है कि ब्रहमा ने मनुष्यों में शांति स्थापित करने के लिए विशेष आकार के मनुष्यों की रचना की थी। विशेष आकार के मनुष्यों की रचना एक ही बार हुई थी। ये लोग काफी शक्तिशाली होते थे और पेड़ तक को अपनी भुजाओं से उखाड़ सकते थे। इन लोगों ने अपनी शक्ति का दुरूपयोग करना शुरू कर दिया और आपस में लड़ने के बाद देवताओं को ही चुनौती देने लगे। अंत में भगवान शंकर ने सभी को मार डाला और उसके बाद ऐसे लोगों की रचना फिर नहीं की गई।

2 साल की बच्ची ने बनाया नेशनल रिकॉर्ड

दो साल की एक बच्ची ने तीरंदाजी कर नेशनल रिकॉर्ड बना लिया है। इसी के साथ उसका नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हो गया है। डॉली शिवानी चेरूकरी की इस बच्ची का जन्म सरोगेसी के द्वारा हुआ था। इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स के बिस्वरूप रॉय चौधरी के अनुसार डॉली ने सात मीटर की दूरी से 200 अंक हासिल किए, यह किसी भी यंगेस्ट इंडियन का बड़ा रिकॉर्ड है। चौधरी के अनुसार इस रिकॉर्ड को तोड़ना आसान नहीं होगा, क्योंकि अपने तीसरे जन्मदिन के नौ दिन पहले ही डॉली ने यह रिकॉर्ड बनाया है, जो 2 वर्ष की श्रेणी में दर्ज हो गया है। डॉली को उसके माता-पिता ने इस प्रतियोगिता के लिए कार्बन से बने तीर दिए थे, जिनका वजन कम था और वह उन्हें आसानी से लेकर अपनी पोजिशन बना पा रही थी। डॉली के पिता चेरूकरी सत्यनारायण ने बताया कि जैसे ही उन्हें यह महसूस हुआ कि बेटी का रूझान तीरंदाजी की ओर है, उसकी ट्रेनिंग शुरू कर दी गई। चेरूकरी एक तीरंदाजी अकादमी के संचालक हैं।❖

गुब्बारे वाला

एक आदमी गुब्बारे बेचकर जीवन यापन करता था। वह गांव के आस-पास लगने वाली हाटों में जाता और गुब्बारे बेचता। बच्चों को लुभाने के लिए वह तरह-तरह के गुब्बारे रखता .....लाल, पीले, हरे, नीले..... और जब कभी उसे लगता कि बिक्री कम हो रही है वह झट से एक गुब्बारा हवा मे छोड़ देता, जिसे देखकर बच्चे खुश हो जाते और गुब्बारे खरीदने के लिए पहुंच जाते। इसी तरह एक दिन वह हाट में गुब्बारे बेच रहा था और बिक्री बढ़ाने के लिए बीच-बीच में गुब्बारे उड़ा रहा था। पास ही खड़ा एक छोटा बच्चा ये सब बड़ी जिज्ञासा के साथ देख रहा था। इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक सफ़ेद गुब्बारा उड़ाया ...तो वह तुरंत उसके पास पहुंचा और मासूमियत से बोला, 'अगर आप ये काला वाला गुब्बारा छोड़ेंगे ...तो क्या वो भी उपर जाएगा?' गुब्बारा वाले ने थोड़े अचरज के साथ उसे देखा और बोला, 'हां बिल्कुल जाएगा। बेटे! गुब्बारे का उपर जाना इस पर निर्भर नहीं करता कि वह किस रंग का है बल्कि इसपर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या है।'

ठीक इसी तरह हम इंसानों पर भी ये बात लागू होती है। कोई अपने जीवन में क्या ध्येय प्राप्त करेगा, ये उसके बाहरी रंग-रूप पर नहीं निर्भर करता है, बल्कि इस बात पर निर्भर करता है कि उसके अन्दर क्या है। अंतत: हमारा दृष्टिकोण हमारे भविष्य को निर्धारित करता है।❖

प्रश्नोत्तरी-

1. अपने प्रदेश के नवनियुक्त राज्यपाल का नाम बताइये?
2. नव नियुक्त राज्यपाल को पद व गोपनीयता की शपथ दिलाने वाले अधिकारी का नाम बताइये?
3. प्रो-कब्बडडी में कौन सी टीम विजयी रही?
4. प्रसिद्धमहिला खिलाड़ी सायना नेहवाल की वर्तमान विश्व रैंकिंग कौन सी है?
5. इस वर्ष का खेल रत्न पुरस्कार किस खिलाड़ी को देने की घोषणा हुई ?
6. हाल ही में कौन से निजी क्षेत्र के बैंक की शुरूआत हुई?
7. गूगल के नए सी.ई.ओ. कौन हैं?
8. वर्तमान समय में प्रदेश विधान सभा में सदस्यों की संख्या कितनी है?
9. नागालैण्ड में हाल ही में किस उग्रवादी गुट से समझौता हुआ है?
10. मच्छर भगाने वाले मोबाइल एप का क्या नाम है?

चुटकुले

एक भैंस घबराई हुई जंगल में भाग रही थी

एक चूहे ने पूछा - क्या हुआ बहन, कहाँ भागी जा रही हो....

भैंस: जंगल में हाथी को पकड़ने पुलिस आई है।

चूहा : पर तुम क्यों भाग रही हो? तुम तो भैंस हो?

भैंस: लगता है तुम नये हो, ये भारत है भाई...

20 साल तो अदालत में यह सिद्ध करने में लग जाएंगे कि मैं हाथी नहीं भैंस हूँ।

'Omg' यह सुन चूहा भी भैंस के साथ भागने लगा